सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

वर्ष 01, अंक 272, नई दिल्ली | बुधवार, 13 दिसम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

आज का सुविचार

खुशी और गम एक दूसरे के समांतर चलते हैं जब एक शांत होता है तो दूसरा भी शिथिल पड़ जाता है

दिल्ली की सड़के सुरक्षित नहीं, रात में होते हैं सबसे ज्यादा हादसे

संजय बाटला

दिल्ली में सबसे ज्यादा पैदल यात्रियों की मौत होती है। इनमें भी देश की राजधानी में रात के समय सबसे ज्यादा दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं। पहले जहां दिन में सड़क दुर्घटनाओं में पैदल यात्रियों की सबसे ज्यादा मौत होती थी।

नईदिल्ली। राजधानी में होने वाली घातक सड़क दुर्घटनाओं में पैदल यात्री सबसे जल्दी शिकार होते हैं। दिल्ली में सबसे ज्यादा पैदल यात्रियों की मौत होती है। इनमें भी देश की राजधानी में रात के समय सबसे ज्यादा दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं। पहले जहां दिन में सड़क दुर्घटनाओं में पैदल यात्रियों की सबसे ज्यादा मौत होती थी, मगर दो वर्ष से ये देखने में आ रहा है कि अब रात में पैदल यात्री सड़क दुर्घटनाओं के सबसे ज्यादा शिकार होते हैं।

यातायात पुलिस के विशेष पुलिस आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव ने बताया कि पैदल यात्रियों के साथ हुईं सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए अब इन दुर्घटनाओं को कम या खत्म करने के लिए उचित कदम उठाए जा रहे हैं। दुर्घटनाओं वाली जगहों पर एक अध्ययन करवाया गया है, जहां जो कमियां हैं उनको खत्म किया जा रहा है। विशेष पुलिस आयुक्त का कहना है कि सुधारात्मक उपाय करने और सड़क उपयोगकर्ताओं के इस वर्ग को जागरूक करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

दिन व रात में पैदल यात्रियों के साथ होने वाली दुर्घटनाएं

दिन और रात की अवधि के आधार पर पैदल यात्री दुर्घटनाओं के वर्गीकरण में अलग-अलग बातें सामने आती हैं। वर्ष 2021 में दिन के दौरान 262 और रात के समय 242 पैदल यात्रियों की मौत हुई थी। ये डाटा वर्ष 2022 में बदल गया। वर्ष 2022 में देखा गया कि दिन के दौरान 301 और रात के दौरान 328 पैदल यात्रियों की मौत हुई थी। 2023 में आंकड़े बताते हैं कि दिन के दौरान 240 मौतें और रात के दौरान 284 पैदल यात्रियों की मौत हुई थी।

दुर्घटना स्थलों का किया गया विश्लेषण

विशेष पुलिस आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव ने बताया कि दिल्ली यातायात पुलिस ने दिल्ली में दुर्घटना संभावित क्षेत्रों की पहचान करने के लिए 2022 के लिए दुर्घटना स्थलों का विश्लेषण किया है। 2022 में 500 मीटर के व्यास के भीतर तीन या अधिक घातक दुर्घटनाओं या उसी क्षेत्र में 10 या अधिक कुल सड़क दुर्घटनाओं के मानदंडों के अनुसार 117 दुर्घटना क्षेत्रों की पहचान की गई है, जैसे कि रिंग रोड (25), जीटी करनाल रोड (17) और आउटर रिंग रोड (15) में सबसे अधिक दुर्घटनाएं हुई हैं।

इसके अलावा पैदल चलने वालों को ब्रिटानिया चौक, जीबी पंत अस्पताल, पीरागढ़ी और मादीपुर मेट्रो स्टेशनों के आसपास के क्षेत्रों में जोखिम का सामना करना पड़ता है। वर्ष 2021 में दुर्घटना क्षेत्रों के व्यापक विश्लेषण में विशिष्ट स्थानों ने दुर्घटनाओं की उल्लेखनीय घटनाओं का प्रदर्शन किया, जिसमें शास्त्री पार्क में 15 दुर्घटनाएं, अशोक नगर में हरनाम पैलेस में 12 दुर्घटनाएं और पीरा गढ़ी चौक में 9 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं।

यातायात पुलिस के एक अध्ययन से पता लगा है कि वर्ष 2021 में सड़क दुर्घटनाओं में 1536 पैदल यात्री घायल हुए थे। इसमें 1269 पुरुष और 267 महिलाएं थीं। इन दुर्घटनाओं में कुल 504 पैदल यात्रियों की मौत हुई। इनमें 446 पुरुष व 58 महिलाएं थीं। वर्ष 2022 में पैदल यात्री सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि हुई।

वर्ष 2022 में 1413 पुरुष और 364 महिलाएं यानी 1777 पैदल यात्री घायल हुए। घातक दुर्घटनाओं की संख्या बढ़कर 629 (553 पुरुष व 76 महिलाएं) हो गई। वर्ष 2023 में सड़क दुर्घटनाओं में कुल 1698 (1138 पुरुष, 360 महिला) पैदल यात्री घायल हुए। उसी वर्ष में 526 (449 पुरुष व 77 महिलाएं) पैदल यात्रियों की मौत हुई है। पैदल यात्री घातक सड़क दुर्घटनाओं में सबसे कमजोर पीड़ितों के रूप में होते हैं।

16 दिसम्बर से एसी बसों में 10 प्रतिशत कम किराया देकर कर सकेंगे यात्रा

यात्रियों को 28 फरवरी, 2024 तक किराये में छूट का लाभ दिया जाएगा। वातानुकूलित सेवाओं को लाभप्रद बनाने के लिए यह निर्णय लिया गया है।

लखनऊ। सर्दियों में बस यात्रियों को वातानुकित बसों में सफर का लाभ देने के लिए योगी सरकार ने किराए में 10 प्रतिशत छूट का निर्णय किया है। यात्री 16 दिसंबर 2023 से वातानुकूलित बसों में इस छूट का लाभ ले सकेंगे। 16 दिसम्बर, 2023 से 28 फरवरी, 2024 तक किराए में स्पेशल विंटर डिस्काउंट के रूप में छूट प्रदान की गई है।

कम आवागमन को देखते हुए लिया निर्णय

उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि यात्रियों को परिवहन निगम द्वारा संचालित वातानुकूलित बसों में भी शीतकाल के दौरान 10 प्रतिशत कम किराया देकर यात्रा करने की सुविधा उपलब्ध होगी।

उन्होंने कहा कि शीतकाल प्रारम्भ होने पर वातानुकूलित सेवाओं में यात्रियों के कम आवागमन को देखते हुए वातानुकूलित बसों का किराया कम किया जा रहा है। परिवहन मंत्री ने बताया कि वातानुकूलित 3×2 बसों का किराया अब 1.47 प्रति किमी प्रति सीट होगा। इसी प्रकार वातानुकूलित 2×2 बसों का किराया 1.74 रुपया, वातानुकूलित शयनयान बसों का किराया 2.33 रुपए एवं वाल्वो (हाई एण्ड) का किराया 2.58 रुपए प्रति किमी प्रति सीट होगा।

उन्होंने कहा कि वातानुकूलित सेवाओं को लाभप्रद बनाए जाने के उद्देश्य से सम्यक विचारोपरान्त यह निर्णय लिया गया है। शीतकाल में ईंधन खपत में कमी आती है। साथ ही साथ लोड फैक्टर भी अधिक किराया होने की वजह से कम हो जाता है।

राजधानी बसों में दिव्यांगों को मिलेगी यात्रा सुविधा

परिवहन मंत्री ने कहा कि संज्ञान में आया है कि दिव्यांगजनों को नई संचालित राजधानी सेवा में यात्रा सुविधा अनुमन्य नहीं है। उन्होंने परिवहन निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि राजधानी सेवा की बसों में भी यात्रा सुविधा उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि राजधानी सेवा की बसों का किराया अब सामान्य बसों के समतुल्य कर दिया गया है। इसलिए राजधानी सेवा की बसों में भी साधारण बसों की भांति दिव्यांगजनों को परिवहन सुविधा दी जाए।

दिल्ली में अब नहीं होगी पार्किंग की दिक्कत, इस मेट्रो स्टेशन के पास हजारों लोगों को मिलेगी सुविधा

परिवहन विशेष न्यूज

कड़कड़डूमा दिल्ली मेट्रो के दूसरे सबसे व्यस्त कारिडोर ब्लू लाइन (द्वारका सेक्टर 21-नोएडा इलेक्ट्रानिक सिटी/वैशाली) और पिंक लाइन (मजलिस पार्क-शिव विहार) के साथ इंटरचेंज स्टेशन है। इस स्टेशन से प्रतिदिन करीब 38 हजार लोग मेट्रो में सफर करते हैं। इसके तहत इस मेट्रो स्टेशन पर ऑटो कैब ई-रिक्शा सहित सभी वाहनों के लिए अलग-अलग लेन की सुविधा होगी। सभी वाहन चिन्हित जगह पर ही खड़े होंगे।

नईदिल्ली। दिल्ली मेट्रो के प्रमुख इंटरचेंज स्टेशनों में शामिल कड़कड़डूमा मेट्रो स्टेशन के पास बहुस्तरीय स्मार्ट भूमिगत पार्किंग बनेगी। इसके लिए दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने टेंडर प्रक्रिया शुरू की है। यदि सब कुछ योजना के अनुरूप हुआ तो टेंडर आवंटन के बाद अगले वर्ष इसका निर्माण शुरू हो जाएगा।

इस मेट्रो स्टेशन से रोजाना 38 हजार लोग करते हैं सफर

इससे कड़कड़डूमा मेट्रो स्टेशन पर पार्किंग की सुविधा बेहतर होगी। कड़कड़डूमा दिल्ली मेट्रो के दूसरे सबसे व्यस्त कारिडोर ब्लू लाइन (द्वारका सेक्टर 21-नोएडा इलेक्ट्रानिक सिटी/वैशाली) और पिंक लाइन (मजलिस पार्क-शिव विहार) के साथ इंटरचेंज स्टेशन है। इस स्टेशन से प्रतिदिन करीब 38 हजार लोग मेट्रो में सफर करते हैं।

कड़कड़डूमा मेट्रो स्टेशन के बेसमेंट में पहले से एक पार्किंग मौजूद है। कड़कड़डूमा में आवासीय और व्यवसायिक संपत्तियों के विकास के लिए डीडीए (दिल्ली विकास प्राधिकरण) की बड़ी परियोजना प्रस्तावित है। इसलिए आने वाले समय में कड़कड़डूमा व्यवसायिक गतिविधियों का बड़ा केंद्र बनेगा।

इसके मद्देनजर डीएमआरसी इस स्टेशन को मल्टीमोडल ट्रांजिट के रूप में विकसित करेगा। इसके तहत इस मेट्रो स्टेशन पर ऑटो, कैब, ई-रिक्शा सहित सभी वाहनों के लिए अलग-अलग लेन की सुविधा होगी। सभी वाहन चिन्हित जगह पर ही खड़े होंगे।

41.47 करोड़ की लागत से होगा निर्माण

इस योजना के तहत ही बहुस्तरीय स्मार्ट भूमिगत पार्किंग बनाने की योजना तैयार की गई है। टेंडर आवंटित होने के बाद 6070.12 वर्ग मीटर क्षेत्र में 41.47 करोड़ रुपये की लागत से दो वर्षों में इसका निर्माण पूरा होगा। इसमें 170 कारें और सौ दो पहिया वाहनों को खड़े करने की सुविधा होगी।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर समस्याओं की भरमार प्लेटफॉर्म संकरे; फुटओवर ब्रिज पर होती है ज्यादा भीड़

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का प्रोजेक्ट एक बार फिर औंधे मुंह गिरा है। इस रेलवे स्टेशन पर समस्याओं की भरमार है। यहां बने प्लेटफॉर्म संकरे हैं। इस कारण यात्रियों की भीड़ अधिक होती है। फुटओवर ब्रिज पर भी काफी भीड़ होती है। स्टेशन के आसपास भीषण अतिक्रमण है।

नईदिल्ली। रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का प्रोजेक्ट एक बार फिर औंधे मुंह गिरा है। लगातार तीसरी बार बोलीदाता न मिलने से रेलवे ने नए सिरे से टेंडर प्रक्रिया शुरू की है। इच्छुक कंपनियां अब पांच जनवरी तक निविदा डाल सकती हैं। इसके बाद अगले पांच दिन में रेल प्रशासन टेंडर आवंटित कर देगा। फिर जमीनी स्तर पर काम शुरू हो जाएगा। अधिकारियों को उम्मीद है कि इस बार रेलवे अपने बेहद महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट को आगे बढ़ा सकेगा। इसमें कोई अड़चन नहीं आएगी।

दरअसल, बीते साल सितंबर में केंद्र सरकार ने देश के तीन प्रमुख रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए 10 हजार करोड़ रुपये की मंजूरी दी थी। इसमें से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के लिए करीब पांच हजार करोड़ रुपये प्रस्तावित हैं। यह काम रेल भूमि विकास प्राधिकरण (आरएलडीए) को करना है। इसके तहत स्टेशन परिसर के साथ ही नजदीकी क्षेत्रों का भी पुनर्विकास होना है। आरएलडीए ने इसके टेंडर की प्रक्रिया बीते साल अक्तूबर में शुरू कर दी थी।

इस बीच तीन बार इसके साथ काम करने को कोई तैयार नहीं हुआ। सबसे पहले टेंडर आवंटन का समय इस साल फरवरी में रखा गया। रेलवे के सूत्रों का कहना है कि इसमें कई कंपनियों ने दिलचस्पी दिखाई थी लेकिन रेलवे की तयशुदा प्रोजेक्ट की लागत 4700 रुपये की जगह टेंडर की न्यूनतम कीमत 8740 करोड़ रुपये एक कंपनी ने रखी थी, जबकि बाकी कंपनियों ने इससे कहीं ज्यादा की बोली लगाई थी। इससे रेलवे को टेंडर रद्द करना पड़ा।

इसके बाद प्रक्रिया शुरू कर रेलवे ने टेंडर आवंटन की तारीख अक्तूबर तय की। काम इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन (ईपीसी) मॉडल पर करने का फैसला लिया गया, लेकिन इसमें भी कोई कंपनी आगे नहीं आई। ऐसे में इसकी समय सीमा पांच दिसंबर बढ़ा दी गई। फिर भी रेलवे बोलीदाता लाने में नाकाम रहा। ऐसे में टेंडर आवंटित करने की नई तारीख 10 जनवरी कर दी है। एक अधिकारी ने बताया कि उम्मीदन इस बार प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी।

1931 में बना था नई दिल्ली रेलवे स्टेशन

पहाड़गंज और अजमेरी गेट के बीच 1926 में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का निर्माण कार्य शुरू हुआ। 1931 में इसका उद्घाटन हुआ था। वर्तमान में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 16 प्लेटफॉर्म हैं। नई दिल्ली स्टेशन देश का सबसे ज्यादा भीड़भाड़ वाला स्टेशन है। अधिकारियों के मुताबिक, यहां से रोज औसतन चार लाख यात्री आवागमन करते हैं। रोज करीब तीन सौ ट्रेनें आती जाती हैं।

यह होना है काम

परियोजना का मास्टर प्लान 120 हेक्टेयर का है। इसमें आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित गुंबद के आकार वाली स्टेशन की नई इमारत बनेगी। दो आगमन और दो प्रस्थान गेट होंगे। रेलवे कार्यालय, रेलवे क्वॉर्टर और सहायक रेलवे कार्यालय बनाए जाएंगे।

इसके साथ ही वाणिज्यिक कार्यालय, होटल और आवासीय परिसर विकसित किए जाएंगे। स्टेशन के दोनों तरफ दो मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्ट हब, 40 मंजिल के ऊंचे ट्विन टावर और पैदल यात्रियों के लिए अलग मार्ग, साइकिल ट्रैक, ग्रीन ट्रैक बनाए जाएंगे। यह सारा काम निर्माण कार्य शुरू होने पर करीब चार वर्ष में पूरा करना है।

फुटओवर ब्रिज पर होती है काफी भीड़

वर्तमान में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर समस्याओं की भरमार है। यहां बने प्लेटफॉर्म संकरे हैं। इस कारण यात्रियों की भीड़ अधिक होती है। फुटओवर ब्रिज पर भी काफी भीड़ होती है। स्टेशन के आसपास भीषण अतिक्रमण है। स्टेशन के दोनों तरफ बनी सड़कें अतिक्रमण के कारण हमेशा जाम में रहती हैं। प्लेटफॉर्म की कमी के कारण कई बार ट्रेनों को उनके तय प्लेटफॉर्म से बदलकर अन्य प्लेटफॉर्म पर शिफ्ट करना पड़ता है। ऐसे में परियोजना के धरातल पर उतरने में देरी से यहां आने वाले यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

नए कल्याणकारी राज्य का आगाज

डा. अश्विनी महाजन,

हर घर में शौचालय बनने से खुले में शौच जैसे अभिशाप से मुक्ति हुई है, जिसके चित्र दिखाकर भारत को पिछड़ा दिखाने का प्रयास विदेशी अक्सर किया करते थे। महिलाएं आज सम्मान से जी रही हैं'

तीन दिसंबर 2023 को हुई मतगणना में जब चार बड़े राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में से तीन में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में काबिज होती दिखाई दे रही है, और कांग्रेस को मात्र एक ही राज्य तेलंगाना में जीत हासिल हुई है, राजनीतिक विश्लेषक भारतीय जनता पार्टी द्वारा इस जीत के कारणों का विश्लेषण कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी चुनाव में अक्सर कांग्रेस पार्टी की सांप्रदायिक वोट बैंक, भ्रष्टाचार, वंशवाद आदि की राजनीति के मुद्दे उठाती रही है। राम मंदिर का निर्माण, धारा 370 की समाप्ति, सांप्रदायिक हिंसा (विशेष तौर पर सर तन से जुदा) जैसे मुद्दे काफी मात्रा में चर्चा में रहे। लेकिन इतिहास गवाह है कि चाहे ये मुद्दे भी महत्वपूर्ण रहे हैं, लेकिन यदि कोई पार्टी या सरकार लोगों की भलाई के लिए काम नहीं करती, तो जनता उसे कभी स्वीकार नहीं करती। वोट अनुपात के रूप में भाजपा को मध्य प्रदेश में 48.81 प्रतिशत, राजस्थान में 41.85 प्रतिशत और छत्तीसगढ़ में 46.35 प्रतिशत वोट मिलना इस बात को दर्शाता है कि पार्टी की केंद्र सरकार की योजनाओं और उनकी उपलब्धियों से जनता संतुष्ट है और इसलिए उसकी सरकार चाहती है। जाहिर है वंशवाद, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिक हिंसा के बारे में भी जनता संवेदनशील है और देश में स्वस्थ एवं विकासवादी राजनीति की स्थापना चाहती है। वो वोट बैंक की राजनीति के चलते आर्थिक-सामाजिक वातावरण को दूषित भी नहीं होने देना चाहती।

विकसित भारत बनाने का सपना : भारत का आम जन इस दंश के साथ जी रहा था कि भारत एक गरीब देश है जो अमीर देशों की अकूत संपत्ति, विकसित इंफ्रास्ट्रक्चर, ऊंची आमदनी और उच्च जीवन स्तर का मुकाबला कर ही नहीं सकता। उनके बराबर पहुंचने में हमें कई सदियां भी लग सकती हैं। 2014 में भारत की अर्थव्यवस्था भी सबसे जर्जर पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी। यहां घटते निवेश और लगातार घटती संवृद्धि दर की त्रासदी भी झेल रहा था। लेकिन मात्र 10 वर्षों से भी कम समय में भारत विश्व की दसवीं अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ता हुआ पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था तक पहुंच गया है और अगले तीन सालों से भी कम समय में चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज भारत विश्व की सबसे तेज बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था भी बन चुका है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के पहले 100 वर्ष पूर्ण होने से पहले एक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प देकर देश के आमजन की आकांक्षाओं को नए पंख देने का काम किया है। स्वाभाविक ही है कि इन आकांक्षाओं के मद्देनजर देश की जनता ने भाजपा के नेतृत्व पर अपना भरोसा जताया है, जिसका एक नमूना मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में दिखा।

मुफ्त की योजनाओं को जनता ने नकारा : पिछले कुछ समय से कुछ राज्यों में सरकारों और राजनीतिक दलों द्वारा बड़ी मात्रा में मुफ्त की योजनाओं के दम पर सत्ता पर काबिज होने का प्रयास शुरू हुआ है। उसके कारण उन्हें कुछ हद तक सफलता भी मिलती हुई दिखाई दे रही है। दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी और उसकी सरकारों द्वारा मुफ्त की योजनाओं की झड़ी लगी हुई है। उधर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में भी इसी प्रकार की मुफ्त की योजनाएं बड़ी मात्रा में चल रही हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन योजनाओं को चलाने हेतु इन प्रांत सरकारों के पास पर्याप्त धन की भारी कमी है जिसके कारण वे एक ओर तो भारी कर्ज में डूबते जा रहे हैं, तो दूसरी ओर इन मुफ्त की योजनाओं के कारण वे आवश्यक मदों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आमजन को सशक्त बनाने वाली अन्य योजनाओं पर खर्च भी नहीं कर पा रहे हैं। इन चुनावों में भी दलों ने इन मुफ्त की योजनाओं की काफी घोषणाएं की। कांग्रेस पार्टी ने मध्य प्रदेश में किसानों के कर्ज माफ करने के अलावा मुफ्त बिजली, गैस सिलेंडर की सब्सिडी, महिलाओं को 1500 रुपए प्रतिमाह, युवाओं को 3000 रुपए बेरोजगारी भत्ते के अलावा कई अन्य मुफ्त की स्कीमों की घोषणा की। इसी तरह से राजस्थान में पहले से ही कांग्रेस सरकार महिलाओं को स्मार्टफोन, सस्ता सिलेंडर, 25 लाख रुपए तक के इलाज के लिए फ्री मेडिकल बीमा, एक करोड़ परिवारों को फ्री फूड पैकेट आदि की योजनाएं तो चला ही रही थी, इस चुनाव में कांग्रेस ने पहले की मुफ्त की योजनाओं के साथ-साथ फ्री लैपटॉप, फ्री बिजली आदि की भी घोषणा की थी। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इन मुफ्त की योजनाओं को गलत मानते हैं और इसे रेवड़ी बांटने की संज्ञा देते हैं। इसके बावजूद भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकारों ने काफी बड़ी मात्रा में कई मुफ्त की योजनाओं को चलाया है, जिसमें उज्जवला लाभार्थियों और आमजन को सस्ता सिलेंडर देना, राजस्थान में 12वीं कक्षा पास करने के बाद लड़कियों को फ्री स्कूटी देना आदि की घोषणा भी शामिल है। लेकिन यह भी सच है कि फ्री बिजली, फ्री पानी और फ्री यात्रा आदि की योजनाओं से भाजपा ने हमेशा परहेज रखा है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि रेवडिया बांटने और नई रेवडियों की घोषणा के बावजूद मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस जीत नहीं पाई और भारतीय जनता पार्टी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ।

कल्याणकारी राज्य की परिभाषा बदली : अभी तक रोजगार योजनाओं के माध्यम से पैसे बांटने, मुफ्त या सस्ती बिजली-पानी, पेट्रोल, डीजल और गैस पर सब्सिडी, सस्ता राशन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकारी खर्च आदि को ही कल्याणकारी राज्य की इतिश्री मान लिया जाता था। लेकिन पिछले 9 सालों से अधिक के दौरान कल्याणकारी राज्य की परिभाषा बदली है और उसमें सुधार होता दिखाई दे रहा है, जिसे जनता का समर्थन भी प्राप्त हुआ है। सबसे पहले आवास योजना में आमूल-चूल परिवर्तन के माध्यम से प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए, आवास योजना पर खर्च की वास्तविकता को सुनिश्चित करने का प्रयास हुआ है। मात्र कुछ ही सालों में लगभग 3 करोड़ घरों का निर्माण हुआ जिसमें 5 लाख करोड़ रुपए केन्द्र सरकार द्वारा दिए गए और 15 लाख करोड़ रुपए स्वयं लाभार्थियों ने खर्च कर, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में अपने लिए बेहतर घरों का निर्माण किया, और बेहतर जीवन का आनंद लेना शुरू किया। एक करोड़ अतिरिक्त घरों का निर्माण भी विभिन्न चरणों में है। उज्ज्वला योजना के तहत 10 करोड़ गरीब महिलाओं को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिया गया और बाद में उन गरीब महिलाओं द्वारा अपने खर्चे पर उन सिलेंडरों को रिफिल कर अपनी सुविधा को बढ़ाया गया। आज एक वर्ष में उज्जवला लाभार्थी तीन से अधिक सिलेंडर औसतन भरवाती हैं। इससे उनके स्वास्थ्य की रक्षा भी हुई है और समय की बचत भी। देश में लगभग सभी गांवों तक बिजली पहुंचाने से जीवन स्तर में सुधार तो हुआ ही है, संचार और इंटरनेट क्रांति को देशभर में ले जाने में भी सफलता मिल रही है। सभी घरों में नल से जल का लक्ष्य भी पूर्ण होने को तैयार है जिससे महिलाओं को दूर से जल लाने नहीं जाना पड़ता और उनके समय की बचत हो रही है। हर घर में शौचालय बनने से खुले में शौच जैसे अभिशाप से मुक्ति हुई है, जिसके चित्र दिखाकर भारत को पिछड़ा दिखाने का प्रयास विदेशी अक्सर किया करते थे। महिलाएं आज सम्मान से जी रही हैं। प्राथमिक चिकित्सा में सुधार और सबसे महत्वपूर्ण आयुष्मान योजना के तहत 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज, कम साधन संपन्न लोगों के लिए एक वरदान सिद्ध हो रहा है। देखा जाए तो ये सभी योजनाएं लक्षित लाभार्थियों के लिए हैं। अभी तक ये लाभार्थी इन सुविधाओं से वंचित थे और पूर्व में राजनीतिक दल उनकी गरीबी, अभाव और बेरोजगारी को दूर करने के छलावों के साथ, उनके वोट बटोर लिया करते थे। लेकिन अब इन लाभार्थियों ने पिछले 9-10 सालों में सरकार की मदद और स्वयं के प्रयासों से इन अभावों से कुछ हद तक मुक्ति पाई है। इस तरह कल्याणकारी राज्य की परिभाषा बदल गई है।

इन कारणों से बच्चों में होती है Calcium की कमी, Parents जानें बचाव के तरीके

बढ़ते बच्चों और टीनएजर की अच्छी सेहत के लिए जरुरी है कि उनके शरीर में कैल्शियम की कमी न हो। पर्याप्त कैल्शियम उनकी हड्डियों को जीवनभर टूटने से बचाता है और उन्हें जीवन में आगे चलकर ऑस्टियोपोरोसिस जैसी गंभीर समस्या नहीं होती। यदि आप भी चाहते हैं कि बच्चों को जीवन भर हड्डियों से जुड़ी कोई बीमारियां न हो तो आप उनके डाइट में कैल्शियम और विटामिन-डी वाले आहार को शामिल करें। तो चलिए आपको बताते हैं कि बच्चों को कितनी मात्रा में कैल्शियम की जरुरत होती है....

कितनी कैल्शियम की मात्रा जरुरी ?

एक्सपर्ट्स की मानें तो बच्चों की बेहतर ग्रोथ के लिए जरुरी है कि 1 से 3 साल के बच्चों की रोजाना करीब 700 मिलीग्राम कैल्शियम की आपूर्ति हो। जबकि 4-8 साल के बच्चों को 1000 मिलीग्राम कैल्शियम की जरुरत होती है। वहीं 9 साल से ज्यादा उम्र के बच्चों को 1300 मिलीग्राम से ज्यादा कैल्शियम की जरुरत होती है।

क्यों होती है कैल्शियम की कमी ?

. यदि बच्चे ने 1 साल से कम उम्र तक मां का दूध न पीया हो।

. विटामिन-डी की कमी से भी कैल्शियम की कमी होती है।

. कुछ हार्मोन जैसे शरीर में कैल्शियम की कमी की वजह बनते हैं।

. पैराथायराइड ग्लैंड के कम विकसित होने से यह समस्या हो सकती है।

. जन्म देते समय यदि मां को डायबिटीज हो तो बच्चे में कैल्शियम की कमी हो सकती है।

. जिजॉर्ज सिंड्रोम नाम के जेनेटिक डिसऑर्डर के कारण बच्चों में कैल्शियम की कमी हो सकती है।

कैसे करें पूरी ?

. बच्चों के शरीर में से कैल्शियम की कमी पूरी करने के लिए उन्हें दूध से बनी चीजें दें। इसके अलावा सोया से बनी चीजें, फिश बोन, बादाम, स्वीट पौटेटो, तरह-तरह की दालें, बीन्स, ब्रोकली, हरी मटर को शामिल करें।

. बच्चों को रोजाना 15 मिनट सुबह और शाम को धूप जरुर दिलवाएं।

. डॉक्टर की सलाह पर उन्हें विटामिन-डी और कैल्शियम सीरप दें।

वक्त पर पकड़ना है काला मोतिया तो एक बार करें ये काम, पॉल्यूशन का जंजाल होगा खत्म

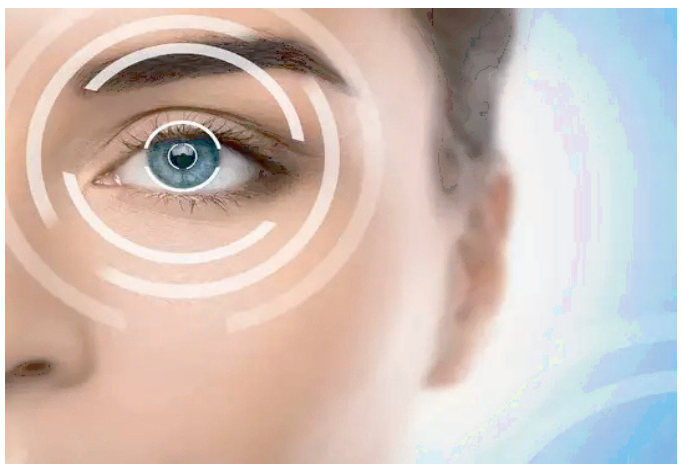

पॉल्यूशन के कारण लोगों को आंखों में जलन, एलर्जी और गले में खराश जैसी परेशानियां हो रही हैं। इससे बचने के लिए विशेष टिप्स दिए गए हैं। आंखों की जांच और डाइलेट करने से आंखों की परेशानियों को समझना आसान होता है। मोबाइल का अधिक इस्तेमाल मायोपिया को बढ़ावा देता है।

पॉल्यूशन ने अपना जोर लगाया हुआ है। लोगों को इस वजह से आंखों में जलन, सांसों की परेशानी, एलर्जी की शिकायत, गले में खराश समेत तमाम तरह की परेशानियों ने घेर रखा है। साथ ही मौसम बदल रहा है और त्योहारों का सीजन भी चल रहा है।

ऐसे में इस बार हम आपके लिए लेकर आए हैं सेहतमंद बने रहने के लिए बेस्ट टिप्स। इन्हें अपनाकर आप खुद को अच्छी सेहत का तोहफा दे सकते हैं।

1. साल में एक बार आई चेकअप

साल में एक बार आंखों की जांच होनी चाहिए, वह भी आंखों को डाइलेट करके। आजकल कंप्यूटर के माध्यम से टेस्टिंग होती है। लेकिन आंखों की अंदरूनी परेशानी का पता लगाने के लिए डाइलेट करने के खास लिक्विड (Tropicamide, Phenylephrine Hydrochloride) की चंद बूंदें आंखों में डाली जाती हैं।

इससे डॉक्टर को आंखों के भीतरी हिस्से, नसें आदि अच्छी तरह दिख जाती हैं। इससे आंखों की परेशानियों को समझना आसान हो जाता है। इस जांच का चलन ज्यादातर शुगर पेशेंट्स और उम्र से जुड़ी परेशानियों में होता है।

फिर भी इस तरह की जांच सभी के लिए होनी चाहिए। 40 साल की उम्र के बाद हर साल आंखों का प्रेशर जरूर चेक कराएं। इससे काला मोतिया वक्त पर पकड़ में आ जाता है।

2. मोबाइल से दूरी

मोबाइल की जरूरत सभी को है। काफी संख्या में बच्चे, बड़े, बुजुर्ग ऐसे हैं, जिनकी यह जरूरत लत बन गई है। लेकिन 6 से 13 साल तक के बच्चों के लिए मोबाइल बड़ी परेशानी पैदा कर रहा है। इससे मायोपिया हो रहा है।

इसमें दूर की निगाह कमजोर हो जाती है। किसी शख्स को 6 फुट की दूरी पर मौजूद कोई भी ऑब्जेक्ट साफ दिखाई न दे तो इसका मतलब है कि वह मायोपिया का शिकार हो सकता है।

ज्यादातर बच्चे मायोपिया वाले ही होते हैं। आम रुटीन में हम एक मिनट में 20 से 25 बार पलकों को झपकाते हैं, लेकिन स्क्रीन देखते समय यह महज 5 से 7 बार रह जाती है।

3. 20:20:20 फॉर्मूला

अगर कोई शख्स किसी से बात कर रहा हो, कहीं जा रहा हो तो वह स्वाभाविक तौर पर कभी नजदीक तो कभी दूर देखता रहता है। लगातार नजदीक देखने का मसला नहीं बनता। लेकिन जब कोई शख्स लगातार मोबाइल या लैपटॉप आदि की स्क्रीन को देखता रहता है तो 'दूरदर्शन' की जरूरत होती है। इसलिए ऐसे शख्स को 20:20:20 फॉर्मूले पर अमल करना जरूरी है यानी हर 20 मिनट बाद 20 बार पलकें झपकना, फिर लगातार 20 सेकंड तक 20 फुट या इससे दूर देखना चाहिए।

इससे आंखों को आराम मिलता है। साथ ही ड्राई आंखों की परेशानी भी कम होती है। इसके अलावा स्क्रीन पर काम करते हुए बार-बार पलकें झपकाएं। याद रखें, हर 5 सेकंड में एक बार पलकें झपकनी चाहिए।

क्या रात में नहीं सोते आपके बच्चे तो पैरेंट्स अपनाएं ये तरीके

बच्चों के स्वास्थ्य का यदि ध्यान न रखा जाए तो वह बीमार हो जाते हैं। बच्चे हो या बड़े सभी के स्वस्थ शरीर के लिए नींद पूरी होना जरुरी है। ऐसे में यदि आपका बच्चा भी अच्छे से नहीं सोना या बिना नींद पूरे किए उठ जाते हैं तो इसका खराब असर उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। कई पेरेंट्स इस बात से परेशान रहते हैं कि उनका बच्चा रात में अच्छी तरह से नहीं सोता और चिड़चिड़ा हो जाता है। ऐसे में आपकी यह परेशानी दूर करते हुए आज आपको कुछ ऐसे टिप्स बताते हैं जिनके जरिए आप बच्चे की स्लीपिंग क्वालिटी सुधार सकते हैं। आइए जानते हैं कैसे.....

बच्चे हो या फिर बड़े सभी को सोने के लिए एक कंफर्टेबल बिस्तर की जरुरत होती है ऐसे में यदि आप अपने बच्चे के लिए सही बिस्तर का चुनाव करें जिस पर उसे बेहतर नींद आई। कई बार माता-पिता बच्चे के लिए बेहद मुलायम और गद्दे में स्प्रिंग वाले बिस्तर बनाव लेते हैं जो बच्चों के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित नहीं होते।

बच्चों को डालें योग की आदत

रोज सुबह उठने के बाद आप बच्चों को एक्सरसाइज और योग करने की आदत डालें। इसके अलावा उन्हें सुबह की रोशनी में पार्क लेकर जाएं और वहां पर उनके साथ समय बिताएं। ऐसा करने से बच्चे चिड़चिड़े नहीं होंगे और उन्हें नींद भी अच्छी आएगी।

एक समय रखें

बच्चे के सोने और जागने का एक समय रखें। इस बात का भी ध्यान रखें कि आपका बच्चा तय समय पर रोजाना सोए और जागे। यदि आपके बच्चे के सोने और जागने का समय फिक्स हो जाएगा तो इससे उसकी बॉडी भी क्लॉक के हिसाब से काम करेगी। इस तरीके से बच्चों को रोज नींद भी अच्छी आएगी।

स्मार्टफोन, टैबलेट से रखें दूर

बच्चों को रात के समय आप स्मार्टफोन, टैबलेट और टीवी से भी दूर ही रखें। इनका ज्यादा इस्तेमाल करनेसे भी बच्चों को रात में अच्छी नींद नहीं आती। ऐसे में बच्चों को आप किताब पढ़कर सोने की डालें। आप चाहें तो खुद ही किताब पढ़कर बच्चों को सुना सकते हैं। इससे उनकी नींद इंप्रूव होगी।

इस बात का भी रखें ध्यान

जब भी बच्चा सोने के लिए जाए तो किसी भी तरह का शोर न करें। शोर होने से भी बच्चे का मन बाकी कामों में लगेगा और उसे नींद अच्छी नहीं आएगी। यदि आप चाहते हैं बच्चों को सुकून भरी नींद आए तो रात के समय कमरे में कम रोशनी रखें।

आम आदमी पार्टी ने हाईकोर्ट में दाखिल की याचिका आप दफ्तर बनाने के लिए नई दिल्ली में मांगी जमीन

परिवहन विशेष न्यूज

आम आदमी पार्टी ने नई दिल्ली में पार्टी दफ्तर बनाने के लिए जमीन की मांग की है। इसके लिए पार्टी ने दिल्ली हाईकोर्ट का रुख किया है। आप ने याचिका में कहा कि पार्टी को स्पष्ट अधिकार के बावजूद और राष्ट्रीय के रूप में मान्यता मिलने के लगभग छह महीने बीत जाने के बावजूद भूमि आवंटित करने से इनकार कर दिया।

दिल्ली। आम आदमी पार्टी की तरफ से दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की गई है। याचिका में केंद्र से नई दिल्ली में पार्टी दफ्तर बनाने के लिए उपयुक्त जमीन आवंटित करने के लिए कानून के अनुसार आवश्यक कदम उठाने का निर्देश देने की मांग की है।

23 अप्रैल 2024 को होगी अगली सुनवाई

आप की याचिका पर सुनवाई के बाद न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने आवास और शहरी मामलों और भूमि और विकास मंत्रालय के सचिव कार्यालय के माध्यम से केंद्र को नोटिस जारी किया। साथ ही कोर्ट ने उन्हें मामले में अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। मामले में अगली सुनवाई 23 अप्रैल 2024 को होगी।

राष्ट्रीय ऑफिस के लिए एक हजार वर्ग मीटर जमीन की हकदार

आम आदमी पार्टी ने याचिका में कहा कि वह अपनी राष्ट्रीय और राज्य इकाइयों के कार्यलयों के निर्माण के लिए कुल एक हजार वर्ग मीटर जमीन की हकदार है। इसके अलावा दिल्ली राज्य इकाइयों के लिए 500 वर्ग मीटर तक भूमि के अतिरिक्त आवंटन का भी प्रावधान है। याचिका में आगे कहा गया कि नेशनल पीपुल्स पार्टी को हाल ही में 2019 में लोकसभा और राज्यसभा में एक-एक सदस्य के साथ राष्ट्रीय पार्टी के रूप में मान्यता दी गई थी। उसे भी अपने राष्ट्रीय पार्टी कार्यालय के निर्माण के लिए नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली में जमीन आवंटित की गई थी।

आम आदमी पार्टी ने कहा कि पार्टी को स्पष्ट अधिकार के बावजूद और राष्ट्रीय के रूप में मान्यता मिलने के लगभग छह महीने बीत जाने के बावजूद भूमि आवंटित करने से इनकार कर दिया। आम आदमी पार्टी ने कहा कि यह न केवल मनमानी है, बल्कि भेदभावपूर्ण भी है।

संजय सिंह की जमानत पर इस तारीख को आएगा फैसला, कोर्ट ने सुनवाई के बाद सुरक्षित रखा आदेश

दिल्ली कोर्ट ने शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सुनवाई के बाद आप सांसद की जमानत पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। संजय सिंह की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मोहित माथुर पेश हुए। राऊज एवेन्यू कोर्ट 21 दिसंबर को शाम 4 बजे संजय सिंह की जमानत याचिका पर फैसला सुनाएगी। बता दें कि आप सांसद 04 अक्टूबर से ईडी की हिरासत में हैं।

नई दिल्ली। आप सांसद संजय सिंह की जमानत याचिका पर दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट में मंगलवार को सुनवाई हुई। दिल्ली कोर्ट ने शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सुनवाई के बाद आप सांसद की जमानत पर फैसला सुरक्षित रख लिया है।

इस तारीख को कोर्ट सुनाएगा फैसला

राऊज एवेन्यू कोर्ट 21 दिसंबर को शाम 4 बजे संजय सिंह की जमानत याचिका पर फैसला सुनाएगी। मंगलवार को संजय सिंह की जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय को दो कार्य दिवस में लिखित दलीलें दाखिल करने को कहा है।

संजय सिंह के वकील ने दिया तर्क

आप सांसद की ओर से पेश वकील मोहित माथुर ने कहा कि संजय सिंह 4 अक्टूबर, 2023 से पहले एक बार भी पूछताछ के लिए नहीं बुलाया गया। उन्होंने आगे तर्क दिया कि संजय सिंह के कानूनी नोटिस ने उनके लिए समस्याएं खड़ी कर दीं। फिर उन्होंने मुझ पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

मोहित माथुर ने कहा कि मैं रिहाई की मांग नहीं कर रहा हूं। मैं जमानत की मांग कर रहा हूं। मेरी व्यक्तिगत स्वतंत्रता संविधान में पवित्र है। उन्होंने आरोपी से सरकारी गवाह बने दिनेश अरोड़ा, चंदन रेड्डी और अन्य गवाहों के बयानों में भी विरोधाभास उठाया और कहा कि दिनेश अरोड़ा का बयान अफवाह है। अब उसका छद्म नाम अल्फ़ा है। कोई कैसे मान ले कि दिनेश अरोड़ा सच बोल रहे हैं?

ठगता था दिखाकर 'गड्डी', दिल्ली पुलिस उठा लाई पकड़कर ठुड्डी, जानिए पूरा मामला

परिवहन विशेष न्यूज

पंजाबी बाग थाना इलाके में महिला को नोटों की गड्डी दिखाकर व उसे बहला फुसलाकर उससे सोने के गहने ठगकर ले जाने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपित की पहचान सीसीटीवी कैमरों की मदद से की गई। इसके बाद आनंद पर्वत के सूरज को पुलिस उसके घर से ठुड्डी पकड़कर ले आई। आरोपित पहले भी 17 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है।

पश्चिमी दिल्ली। पंजाबी बाग थाना इलाके में महिला को नोटों की गड्डी दिखाकर व उसे बहला फुसलाकर उससे सोने के गहने ठगकर ले जाने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपित की पहचान सीसीटीवी कैमरों की मदद से की गई। इसके बाद आनंद पर्वत के सूरज को पुलिस उसके घर से ठुड्डी पकड़कर ले आई।

आरोपित पहले भी 17 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। पुलिस का दावा है कि आरोपित की गिरफ्तारी से 13 आपराधिक मामलों को हल कर लिया गया है।

पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि शुक्रवार को पंजाबी बाग थाना पुलिस ने ठगी को लेकर प्राथमिकी दर्ज की थी। शिकायतकर्ता ने बताया था कि दो लोगों ने नोटों की गड्डी दिखाकर उनसे सोने की बालियां, लाकेट व अन्य आभूषण ले लिए थे। आरोपित को पकड़ने के लिए टीम बनाई गई।

टीम ने आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली तो उसमें दो युवकों की पहचान की गई। उनमें से एक की पहचान हुई। इसके बाद टीम ने छापेमारी कर सूरज को पकड़ लिया।

पूछताछ के दौरान उसने स्वीकार किया कि उसने अपने एक साथी आकाश उर्फ प्रिंस उर्फ माथा के साथ मिलकर वारदात को अंजाम दिया।पुलिस उसके साथियों को पकड़ने के लिए छापेमारी कर रही है। सूरज आकाश उर्फ प्रिंस के संपर्क में आया और नशे की लत को पूरा करने के लिए उसने झपटमारी, चोरी, सेंधमारी और अन्य अपराध करना शुरू कर दिया। वह पहले भी 17 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है।

इन थाना इलाकों में की वारदात

थाना	वारदात
पंजाबी बाग	11
जनकपुरी	1
तिलक नगर	1

जेएनयू में विरोध-प्रदर्शन को लेकर नया आदेश, धरना देने पर लगेगा भारी जुर्माना; निष्कासन की भी हो सकती है कार्रवाई

जेएनयू के शैक्षणिक इमारतों के 100 मीटर के दायरे में दीवार पर पोस्टर लगाने और धरना देने पर 20000 रुपये तक का जुर्माना या निष्कासन हो सकता है। इसके साथ ही किसी भी राष्ट्र-विरोधी कृत्य पर 10000 रुपये का जुर्माना लगेगा। नए आदेश पर बवाल मचा हुआ है। छात्रों का आरोप है कि यह रोक मुख्य प्रशसनिक ब्लॉक के लिए ही थी लेकिन अब तानाशाही रवैया अपनाया जा रहा है।

नई दिल्ली। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) में विरोध प्रदर्शन को लेकर जारी नए आदेश पर बवाल मचा हुआ है। नई नियमावली को लेकर छात्र संगठनों में आक्रोश व्याप्त है। छात्रों का आरोप है कि यह रोक मुख्य प्रशसनिक ब्लॉक के लिए ही थी, लेकिन अब तानाशाही रवैया अपनाया जा रहा है।

राष्ट्र विरोध कृत्य पर लगेगा इतना जुर्माना

जेएनयू प्रशासन की ओर से जारी नई नियमावली के मुताबिक कई नियम और जुर्माने भी कड़े कर दिए गए हैं। संस्थान की शैक्षणिक इमारतों के 100 मीटर के दायरे में दीवार पर पोस्टर लगाने और धरना देने पर 20,000 रुपये तक का जुर्माना या निष्कासन हो सकता है। इसके साथ ही किसी भी राष्ट्र-विरोधी कृत्य पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगेगा।

नए आदेश पर अधिकारी ने दी सफाई

वहीं, विश्वविद्यालय से जुड़े एक अधिकारी ने मंगलवार को बताया कि विरोध प्रदर्शनों पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है और निर्दिष्ट क्षेत्रों में इसकी अनुमति है। अधिकारी ने कहा कि परिसर के प्रतिबंधित क्षेत्रों में विरोध प्रदर्शन करने पर 20,000 रुपये का जुर्माना एक पुराना नियम है और यह कोई नया नियम नहीं है, जिसे पिछले महीने विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद (ईसी) ने सर्वसम्मति से मंजूरी दी थी।

अधिकारी ने बताया कि हमने कुछ भी नहीं बदला है। ये नियम पहले से ही मौजूद थे। हमने यह सुनिश्चित करने के लिए कुछ अन्य नियम पेश किए हैं कि शैक्षणिक प्रक्रिया में कोई व्यवधान न हो। छात्रों के पास अभी भी निर्दिष्ट स्थानों पर विरोध करने का लोकतांत्रिक अधिकार है।

छात्र संगठनों ने JNU के कदम की निंदा की

बता दें कि विश्वविद्यालय के छात्र संगठनों ने इस कदम की निंदा करते हुए कहा है कि यह छात्रों से असहमति दर्ज कराने का लोकतांत्रिक अधिकार छीनता है। मैनुअल को चुनाव आयोग की मंजूरी के बाद 2 मार्च को टेफ्लास छात्र संघ कार्यालय के बंद दरवाजे को जबरन खोलने के लिए जेएनयूएसयू अध्यक्ष आइशी घोष पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया और इस तरह की हरकत दोबारा न करने की चेतावनी दी गई।

JNU प्रशासन के नए आदेश में क्या है?

विश्वविद्यालय की अधिकृत फैकल्टी कर्मचारी- सुरक्षा कर्मी द्वारा पहचान पूछे जाने पर न देना नियमों का उल्लंघन माना जाएगा।

जेएनयू परिसर में बिना पूर्व अनुमति के फ्रेशर की स्वागत पार्टी, विदाई, डिस्क जाकी (डीजे) जैसे कार्यक्रम आयोजित करने पर छह हजार तक जुर्माना लगाया जा सकता है।

दौरे, भ्रमण, क्षेत्र भ्रमण, खेल गतिविधि, एनसीसी, एनएसएस के दौरान अनुचित व्यवहार

करना।

अपमानजनक धार्मिक, सांप्रदायिक, जातिवादी या राष्ट्र-विरोधी टिप्पणियों वाले पोस्टर, पैम्फलेट (पाठ या चित्र) को छापना, प्रसारित करना या चिपकाना, कोई भी गतिविधि जो किसी धर्म, जाति या समुदाय के प्रति असहिष्णुता को उकसाती है या राष्ट्र-विरोधी प्रकृति की होती है जो परिसर में शांतिपूर्ण माहौल को बिगाड़ती है, इनमें संलिप्त मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

विश्वविद्यालय को किसी भी तरीके से गलत प्रमाण पत्र या गलत जानकारी प्रस्तुत करना।

किसी भी शैक्षणिक और प्रशासनिक परिसर के 100 मीटर के दायरे में भूख हड़ताल, धरना, समूह सौदेबाजी और किसी भी अन्य प्रकार का विरोध प्रदर्शन और किसी शैक्षणिक और प्रशासनिक परिसर के प्रवेश या निकास को अवरुद्ध करना।

प्रशासन, शैक्षणिक परिसरों आदि में विश्वविद्यालय समुदाय के किसी भी सदस्य की आवाजाही को बाधित करना।

परिसर में किसी व्यक्ति के अनाधिकृत प्रवेश या विश्वविद्यालय परिसर के किसी भी हिस्से पर अनाधिकृत कब्जा करना या उसमें शामिल होना।

विश्वविद्यालय समुदाय के किसी भी सदस्य के खिलाफ अपमानजनक या डराने वाली भाषा का उपयोग करना।

ऐसा करने पर 20 हजार जुर्माना और छात्रावास से दो सेमेस्टर तक की बेदखली, पूरे जेएनयू परिसर से दो सेमेस्टर तक निष्कासन और सीमा से बाहर घोषित कर दिया जाएगा।

नियमावली में और गलतियों पर जुर्माना की बात कही गई है।

खुली छत पर नियमों का उल्लंघन करते पाए गए 11 बार-रेस्तरां, भेजा नोटिस

हौज खास में छतों पर लाउड-स्पीकर व अन्य ध्वनि यंत्रों का इस्तेमाल कर ध्वनि प्रदूषण किया जा रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) द्वारा गठित की गई संयुक्त समिति द्वारा निरीक्षण किए गए 12 बार-रेस्तरां में से 11 ध्वनि प्रदूषण के नियमों का उल्लंघन करते हुए पाए गए। संयुक्ति समिति ने इनमें से कुछ को पर्यावरण हर्जाना लगाने के संबंध में कारण बताओ नोटिस जारी किया।

नई दिल्ली। हौज खास में छतों पर लाउड-स्पीकर व अन्य ध्वनि यंत्रों का इस्तेमाल कर ध्वनि प्रदूषण किया जा रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) द्वारा गठित की गई संयुक्त समिति द्वारा निरीक्षण किए गए 12 बार-रेस्तरां में से 11 ध्वनि प्रदूषण के नियमों का उल्लंघन करते हुए पाए गए। संयुक्ति समिति ने इनमें से कुछ को पर्यावरण हर्जाना लगाने के संबंध में कारण बताओ नोटिस जारी किया तो कुछ के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए दिल्ली नगर निगम के आयुक्त को पत्र लिखा गया है। संयुक्त समिति ने एक रिपोर्ट दाखिल कर यह जानकारी एनजीटी को दी। रिपोर्ट के अनुसार 28 नवंबर तक एमसीडी, एसडीएम हौज खास व दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) द्वारा किए गए निरीक्षण में 11 बार-रेस्तरां में ध्वनि प्रदूषण के नियमों का उल्लंघन पाया गया। इसमें से दस इकाईयों के विरुद्ध ध्वनि प्रदूषण फैलाने के लिए दस-दस हजार रुपये का नोटिस भेजा गया और अब तक महज दस हजार रुपये वसूल किए गए हैं।

ज्वेलर दंपती से 50 लाख लूटने वाले छह गिरफ्तार, लूटी गई रकम में 31.46 लाख रुपये बरामद

दिल्ली के आनंद विहार रेलवे स्टेशन के बाहर एक ज्वेलर दंपती से 50 लाख रुपयों से भरा बैग लूटने के मामले में पुलिस ने ऑटो चालक समेत छह आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। इनके कब्जे से लूटी गई रकम में 31.46 लाख रुपये नकद व अपराध में प्रयुक्त दो ऑटो बरामद किए गए हैं। गिरफ्तार आरोपितों में शमीम जामिया नगर थाने का घोषित बदमाश है।

नई दिल्ली। आनंद विहार रेलवे स्टेशन से चांदनी चौक जाने वाले एक ज्वेलर दंपती को बेवकूफ बना उनसे 50 लाख रुपयों से भरा बैग लूटने के मामले में क्राइम ब्रांच ने दो ऑटो चालक समेत छह आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। सीसीटीवी से सुराग मिलने पर क्राइम ब्रांच ने इन्हें दिल्ली, बिहार के पटना व उत्तर प्रदेश के बिजनौर से गिरफ्तार किया है।

लूटी गई रकम में 31.46 लाख रुपये बरामद

इनके कब्जे से लूटी गई रकम में 31.46 लाख रुपये नकद व अपराध में प्रयुक्त दो ऑटो बरामद किए गए हैं। गिरफ्तार आरोपितों में शमीम, जामिया नगर थाने का घोषित बदमाश है। मोहम्मद शहजाद, सईद उर्फ कलवा, जमील उर्फ फैमू, अरशद, गांव सफदलपुर, बिजनौर, ललिता प्रसाद, गांव-भवाला, बिजनौर व शमीम, जाकिर नगर, ओखला का रहने वाला है।

इनकी गिरफ्तारी से आनंद विहार में ज्वेलर दंपती से सोने के आभूषण व 50 लाख नकदी सहित अन्य कीमती सामान लूटने के मामले को सुलझा लिया गया है। 28 नवंबर को गाजीपुर के मार्किनगंज के रहने वाले एक दंपती ने पुलिस में शिकायत कर बताया था कि सुबह 10.15 बजे आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरने के बाद उन्होंने चांदनी चौक जाने के लिए ऑटो लिया था।

दो बैग में थे 50 लाख रुपये

उन्हें वहां अपनी दुकान के लिए सोना खरीदने के लिए जाना था। उनके पास दो बैग में 50 लाख रुपये थे। इसलिए वे जल्द ऑटो में बैठ गए। कुछ दूर जाने के बाद ड्राइवर और उसके सहयोगी ने ऑटो रोक कर उन्हें बताया कि इंजन में खराबी आ गई है और वे उन्हें आगे नहीं ले जा पाएंगे। उसी समय एक अन्य ऑटो उनके पास आया। जिसपर दोनों ने दंपती को उक्त ऑटो में बैठ जाने के लिए कहा।

बैग लूटने के बाद ऑटो से उतारा

उसमें पहले से तीन यात्री बैठे थे, इसलिए दंपती ने सुरक्षा कारणों से उसमें बैठने से इनकार कर दिया, लेकिन दोनों ऑटो ड्राइवरों ने दबाव बना उन्हें बैठा लिया। कुछ दूर जाने के बाद ऑटो ड्राइवर और तीन अन्य जो पहले से ही उस ऑटो में सवार थे। उन्हें धमकी दी और उनके बैग लूट लिए और उन्हें ऑटो से उतार दिया। मामले की गंभीरता को देखपते हुए क्राइम ब्रांच को लुटेरों को पकड़ने का काम सौंपा

गया।

घटना से संबंधित सभी सीसीटीवी फुटेज एकत्र किए गए और उनका विश्लेषण किया गया। सीसीटीवी फुटेज में पीड़ितों को फ्लाईओवर गाजीपुर के नीचे एक एक व्यक्ति ऑटो में बैठे पाया गया। वह ऑटो महावीर सिंह, निवासी जगदंबा विहार, दिल्ली के नाम पर पंजीकृत पाया गया। उस ऑटो की जानकारी यातायात पुलिस से एकत्र की गई तो यातायात उल्लंघन का चालान सरफराज और आफताब के नाम पर पंजीकृत पाई गई।

इसके अलावा एक मोबाइल नंबर भी प्राधिकरण में पंजीकृत पाया गया। उक्त मोबाइल नंबर का कॉल डिटेल रिकॉर्ड प्राप्त कर जांच की गई। जांच में उसकी उपस्थिति बिजनौर में पाई गई। डीसीपी सतीश कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम जब बिजनौर में आरोपितों के घरों पर छापा मारा तब सभी अपने-अपने घरों से फरार पाए गए। शहजाद नाम के एक संदिग्ध के स्वजन से पूछताछ करने और उसकी बेटी के मोबाइल की जांच करने पर एक और मोबाइल नंबर का पता चला।

20 से अधिक होटलों में की गई जांच

उसका विवरण प्राप्त करने पर वह अपराध के अगले दिन सक्रिय पाया गया, लेकिन उसका वर्तमान लोकेशन पटना, बिहार में पाया गया। पटना में कई होटलों में बिजनौर आईडी से ठहरने वाले ग्राहकों के बारे में पता लगाया गया। 20 से अधिक होटलों की जांच करने पर राजा बाजार में स्थित एक गेस्ट हाउस में बिजनौर के चार व्यक्ति रहते हुए पाए गए। वहां से चारों को गिरफ्तार कर लिया गया।

उनके पास से 23.50 लाख रुपये बरामद की गई। इनसे पूछताछ के बाद ललिता प्रसाद को भी बिजनौर से पकड़ लिया गया। उससे पूछताछ के बाद शमीम को जाकिर नगर, ओखला से दबोच लिया गया। उसके कब्जे से 7.96 लाख बरामद कर लिया गया। साथ ही अपराध में प्रयुक्त दोनों ऑटो बरामद किए गए।

ऑन डिमांड गुरुग्राम के बड़े होटलों में लड़कियों की सप्लाई, वेबसाइट के जरिए होता देह व्यापार; दलाल और युवती गिरफ्तार

वेबसाइट के जरिये चल रहे देह व्यापार के धंधे का पुलिस ने भंडाफोड़ किया। वेबसाइट के जरिये वॉट्सऐप पर संपर्क कर ऑन डिमांड युवतियों को बड़े होटल में भेजा जाता था। पुलिस ने सोमवार रात एक दलाल सहित युवती को गिरफ्तार कर लिया। आरोपितों के खिलाफ सुशांत लोक थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

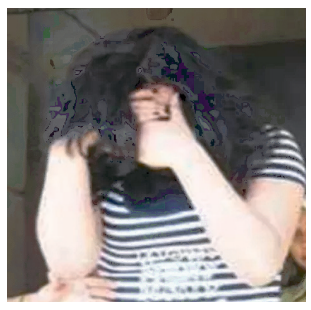

गुरुग्राम। वेबसाइट के जरिये चल रहे देह व्यापार के धंधे का गुरुग्राम पुलिस (Gurugram Police) ने भंडाफोड़ किया। वेबसाइट के जरिये वॉट्सऐप पर संपर्क कर ऑन डिमांड युवतियों को बड़े होटल में भेजा जाता था। पुलिस ने सोमवार रात एक दलाल सहित युवती को गिरफ्तार कर लिया। आरोपितों के खिलाफ सुशांत लोक थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को सूचना मिली थी कि एक वेबसाइट के जरिये देह व्यापार का धंधा चल रहा है। पुलिस ने जब वेबसाइट की जांच की तो पाया कि इसमें कई युवतियों और युवकों की फोटो के साथ मोबाइल नंबर दिया गया है।

पुलिस ने अपनी टीम के सदस्य को ग्राहक बनाकर भेजा

इस पर पुलिस टीम ने अपनी ही टीम के एक सदस्य को फर्जी ग्राहक बनाकर दिए गए नंबर पर संपर्क किया। पुलिसकर्मी ने एक युवती को सिलेक्ट किया और 12 हजार रुपये में सौदा तय किया। कुछ देर बाद पुलिसकर्मी को होटल-91 गोल्फ कोर्स रोड की लोकेशन भेजकर वहां बुलाया गया।

पुलिस को लड़की के साथ होटल भेजा

एसीपी सुशीला के नेतृत्व में कई टीमें तैयार की गईं और लोकेशन पर भेजी गईं। इस दौरान एक स्कॉर्पियो आकर रुकी। चालक ने फोन कर फर्जी ग्राहक बने पुलिसकर्मी को बुलाया और युवती को उसके साथ होटल भेज दिया।

यहां पहले से मौजूद पुलिसकर्मियों ने युवती को पकड़ लिया। वहीं जैसे ही आरोपित मौके से जाने लगा तो पुलिस ने स्कार्पियो को घेर लिया और उसे भी पकड़ लिया।

राजस्थान का है दलाल

पकड़े गए गाड़ी के ड्राइवर (दलाल) की पहचान राजस्थान के कोटपुतली निवासी संदीप राठौर के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से दिए गए 12 हजार रुपये, मोबाइल व टेम्परेरी नंबर की स्कार्पियो गाड़ी बरामद की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नौ लोगों की मौत की जिम्मेदार निर्माण एजेंसी ब्लैक लिस्ट, 5वीं पास चला रहा था लिफ्ट

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित आम्रपाली ड्रीम वैली (Amrapali Dream Project) की साइट पर हुए हादसे में नौ लोगों की जान गई थी। मामले में एनबीसीसी ने साइट पर निर्माण कार्य कर रही निर्माण एजेंसी गिरधारी लाल को ब्लैक लिस्ट कर दिया है। इस संबंध में एक पत्र एनबीसीसी की तरफ से कमिश्नरेट पुलिस को भेजा गया है। कई अन्य लापरवाही भी जांच में प्रकाश में आई है।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित आम्रपाली ड्रीम वैली (Amrapali Dream Project) की साइट पर हुए हादसे में नौ लोगों की जान गई थी। मामले में एनबीसीसी ने साइट पर निर्माण कार्य कर रही निर्माण एजेंसी गिरधारी लाल को ब्लैक लिस्ट कर दिया है। इस संबंध में एक पत्र एनबीसीसी की तरफ से कमिश्नरेट पुलिस को भेजा गया है। कई अन्य लापरवाही भी जांच में प्रकाश में आई है।

बारिश के दौरान भी श्रमिकों से काम करवाया जा रहा था। तेज बारिश में लिफ्ट चलाई गई। उसके कुछ देर बाद ही हादसा हो गया। लिफ्ट को पांचवीं पास युवक चला रहा था। युवक खुद को मैकेनिकल इंजीनियर बताकर लोगों को गुमराह करता था। निर्माण एजेंसी ने कभी इस बात को गंभीरता से नहीं लिया। मामले में गिरफ्तार हो चुके पांच आरोपितों के खिलाफ कोर्ट में चार्जशीट भी दाखिल कर दी गई है।

एनबीसीसी को इसलिए सौंपी गई थी जिम्मेदारी

दरअसल, आम्रपाली निर्माण कार्य नहीं कर पाया था। इस वजह से एनबीसीसी को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई थी। एनबीसीसी की तरफ से गिरधारी लाल कंस्ट्रक्शन कंपनी से एमओयू साइन किया गया था। इस एमओयू के तहत साइट पर निर्माण कार्य गिरधारी लाल कंपनी की तरफ से किया जाना था जबकि निगरानी की जिम्मेदारी एनबीसीसी की है।

एनबीसीसी ने क्या कहा?

पुलिस जांच के दौरान एनबीसीसी की तरफ से यह कहकर पल्ला झाड़ लिया गया कि उनकी जिम्मेदारी इंजीनियरिंग ड्राइंग बनाने की थी। पुलिस जांच में यह बात नहीं मानी गई है कि एनबीसीसी की जिम्मेदारी सिर्फ इंजीनियरिंग ड्राइंग की थी। एनबीसीसी के दो जीएम विकास व आदित्य चंद्रा को भी मुकदमे में नामजद किया गया है। इस संबंध में जांच अभी जारी है।

निर्माणाधीन साइट पर यह होने चाहिए सुरक्षा के मानक

निर्माणधीन परिसर में जाल बिछाया जाना अनिवार्य है।

उपयोग के अनुसार महीने में एक या दो बार लिफ्ट का मेंटेनेंस होना चाहिए।

कामगार के पास सुरक्षा किट (हेलमेट, बेल्ट व दस्ताने, पैरों में बूट) आदि होना चाहिए।

आपात स्थिति की जानकारी देने के लिए हूटर का लगा होना अनिवार्य है।

निर्माण यदि देर शाम तक होता है तो रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।

कामगारों के लिए प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था की सुविधा होनी चाहिए।

बारिश के दौरान निर्माण कार्य नहीं होना चाहिए।

यह है मामला

ग्रेटर नोएडा वेस्ट के टेकजोन फोर स्थित आम्रपाली ड्रीम वैली प्रोजेक्ट में 15 सितंबर की सुबह लिफ्ट गिर गई थी। लिफ्ट में सवार नौ श्रमिकों की मौत हो गई थी। बारिश के दौरान लिफ्ट चलाई गई थी। समय से मरम्मत कार्य नहीं होने के चलते लिफ्ट ऊंचाई से गिरी थी। घटना के बाद बिसरख कोतवाली में केस दर्ज किया गया था, जिसकी जांच वर्तमान में बादलपुर कोतवाली इंस्पेक्टर कर रहे है।

लोन माफिया लक्ष्य तंवर की 16 करोड़ की प्रॉपर्टी होगी जब्त, जानिए पूरा मामला

लोन माफिया लक्ष्य तंवर की पुराना आर्यनगर में 16 करोड़ की प्रॉपर्टी पुलिस जब्त कर रही है। यह संपति लक्ष्य तंवर और उसके साथी सुनील कुमार ने किसी अन्य के नाम पर ली। आर्यनगर में 606 वर्गमीटर भूमि है जिस पर कुछ खाली हिस्सा और दो मंजिला भवन बना है। लक्ष्य और उसके गिरोह के सदस्यों पर अब तक 48 मुकदमे गाजियाबाद में दर्ज हो चुके हैं।

गाजियाबाद। लोन माफिया लक्ष्य तंवर की पुराना आर्यनगर में 16 करोड़ की प्रॉपर्टी पुलिस जब्त कर रही है। यह संपत्ति लक्ष्य तंवर और उसके साथी सुनील कुमार ने किसी अन्य के नाम पर ली। आर्यनगर में 606 वर्गमीटर भूमि है जिस पर कुछ खाली हिस्सा और दो मंजिला भवन बना है। बैंक प्रबंधकों संग मिलकर किया था 400 करोड़ का फर्जीवाड़ा

लक्ष्य और उसके गिरोह के सदस्यों पर अब तक 48 मुकदमे गाजियाबाद में दर्ज हो चुके हैं। लक्ष्य तंवर पर आरोप है कि उसने पंजाब नेशनल बैंक की गाजियाबाद और आगरा स्थित कई शाखाओं के प्रबंधकों संग मिलकर संपत्तियों की कीमत की 10 गुना तक रकम का लोन पास कराया।

बढ़ सकती है एल्विश यादव की परेशानी! इस शख्स ने कहा- दो दिन के अंदर पेश करूंगा सबूत

यूट्यूबर एल्विश यादव (YouTuber Elvish Yadav) के गले में सांप के साथ वीडियो के मामले में पुलिस ने अदालत में शिकायत दायर करने वाले व्यक्ति से दो दिन के अंदर सबूत देने के लिए कहा है। इस मामले में अदालत ने पुलिस को 15 दिन का समय देते हुए 16 दिसंबर तक पुलिस को कार्रवाई रिपोर्ट अदालत में जमा करने के आदेश दिया था।

गुरुग्राम। यूट्यूबर एल्विश यादव (YouTuber Elvish Yadav) के गले में सांप के साथ वीडियो के मामले में पुलिस ने अदालत में शिकायत दायर करने वाले व्यक्ति से दो दिन के अंदर सबूत देने के लिए कहा है। इस मामले में अदालत ने पुलिस को 15 दिन का समय देते हुए 16 दिसंबर तक पुलिस को कार्रवाई रिपोर्ट अदालत में जमा करने के आदेश दिया था।

शिकायतकर्ता पीपल फॉर एनिमल्स (People For Animals) के पदाधिकारी सौरव गुप्ता ने बताया कि मंगलवार को बादशाहपुर थाना पुलिस की तरफ उनको नोटिस आया है। इसमें दो दिन के अंदर एल्विश यादव के गले में सांप की वीडिया के सबूत देने के लिए कहा है।

उनका कहना है कि वह दो दिन के अंदर ही पुलिस के सामने सबूत के साथ पेश होंगे। इस मामले में बादशाहपुर थाना पुलिस जांच कर रही है।

उनका दावा है कि मशहूर सिंगर राहुल फाजिलपुरिया के साथ एल्विश यादव ने गाने 32 बोर की वीडियो बनाई थी। वह वीडियो गुरुग्राम के सेक्टर-71 के निर्माणाधीन बिल्डिंग में बनाई गई।

इस मामले की सुनवाई ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास प्रगति राणा की अदालत में सुनवाई चल रही है। इस मामले में 16 दिसंबर को अदालत में सुनवाई होगी।

मुरादनगर विधायक के नाम से Facebook पर तैयार की फर्जी आईडी, शिकायत दर्ज

मुरादनगर से भाजपा विधायक अजीतपाल त्यागी की फेसबुक पर शातिरों ने फर्जी आईडी तैयार कर दी। उनके कई फोटो व आयोजन की डिटेल यहां प्रसारित की गई। मंगलवार को अजीतपाल त्यागी ने अपनी आईडी से पोस्ट पर इस फर्जी आईडी के बारे में बताया। साथ ही कहा कि लोग इसके झांसे में ना आये। उनके नाम से कोई ऑनलाइन आर्थिक सहायता मांगे तो ना दें।

गाजियाबाद। मुरादनगर से भाजपा विधायक अजीतपाल त्यागी की फेसबुक पर शातिरों ने फर्जी आईडी तैयार कर दी। उनके कई फोटो व आयोजन की डिटेल यहां प्रसारित की गई। मंगलवार को अजीतपाल त्यागी ने अपनी आईडी से पोस्ट पर इस फर्जी आईडी के बारे में बताया। साथ ही कहा कि लोग इसके झांसे में ना आये। उनके नाम से कोई ऑनलाइन आर्थिक सहायता मांगे तो ना दें। उन्होंने थाने में भी तहरीर दी है।

खुद को बैंककर्मी बता शातिर ने लगाई पचास हजार की चपत

मोदीनगर कोतवाली क्षेत्र की भूपेंद्रपुरी कालोनी में शातिर ने खुद को बैंककर्मी बताकर युवक को पचास हजार की चपत लगा दी। आरोपित ने खाता बंद करने की चेतावनी देकर उनसे डेबिट कार्ड की डिटेल ली। आरोप है कि कुछ देर बाद ही खाते से रुपए कटने लगे। पीड़ति का कहना है कि उन्होंने कोई ओटीपी नहीं बताई थी। मामले में पीड़ति की शिकायत पर पुलिस ने छानबीन शुरू कर दी है।

पीड़ति अभिषेक कुमार निजी कंपनी में नौकरी करते हैं। उनका मोदीनगर के एक बैंक में बचत खाता है। उनके पास दो दिन पहले अज्ञात नंबर से काल आई। काल करने वाले युवक ने खुद को बैंककर्मी बताया। कहा खाते में केवाइसी अपडेट होनी है। यदि नहीं कराई तो खाता बंद हो जाएगा। आरोपित ने झांसा दिया कि इन दिनों आनलाइन ही केवाईसी की सुविधा उपलब्ध है। इसी एवज में आरोपित ने युवक के खाते की जानकारी ले ली।

इसके कुछ ही समय बाद युवक के खाते से रुपए कटने लगे। तभी से आरोपित का मोबाइल नंबर बंद है। मामले की शिकायत पीड़ति ने बैंक व थाने में की है। एसीपी मोदीनगर ने बताया कि शिकायत के आधार पर छानबीन चल रही है। साइबर सेल की टीम से भी मदद ली जा रही है। जल्द आरोपित की गिरफ्तारी होगी।

विष्णुदेव साय का नाम आगे करके भाजपा ने देशभर के आदिवासी वर्ग को साध लिया है

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री मोदी ने सत्ता में आने के बाद से ही भ्रष्टाचार को बड़ा मुद्दा बनाया है। भ्रष्टाचार में लिप्त विपक्षी पार्टी के नेताओं के घरों पर ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स की रेड हो रही है। झारखंड के कांग्रेस के सांसद धीरज साहू के घर पर इनकम टैक्स की रेड और 500 करोड़ रुपए की बरामदी हुई है।

विष्णुदेव साय को छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री घोषित करके भारतीय जनता पार्टी ने एक तीर से अनेक निशाने साधे हैं। वैसे भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जीवंत आदिवासी समाज को उन्नति के नये शिखर एवं राजनीति में समुचित प्रतिनिधि देने के लिये प्रतिबद्ध हैं। द्रौपदी मुर्मू को भारत का राष्ट्रपति बनाकर उन्होंने इस समुदाय की आशाओं पर खरे उतरने की कोशिश की है। निश्चित ही विष्णुदेव साय के मुख्यमंत्री बनने से आदिवासी समुदाय में खुशी जगी है, छत्तीसगढ़ के साथ-साथ पड़ोसी राज्य झारखंड और ओडिशा में भी भाजपा को लाभ मिलेगा, वहीं मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान के आदिवासी समुदाय के लोगों भी प्रभावित किया जा सकेगा। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव की दृष्टि से विष्णुदेव साय का निर्णय नया राजनीतिक धरातल तैयार करेगा एवं नयी राजनीतिक दिशाओं को उद्घाटित करेगा।

जमीन से जुड़े, विनम्र, ईमानदार एवं सादगीप्रिय विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाने का निर्णय निश्चित ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह एवं भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा की दूरगामी सोच एवं राजनीतिक परिपक्वता से जुड़ी साहसिक एवं करिश्माई राजनीति की निष्पत्ति है। छत्तीसगढ़ की राजनीति में विष्णुदेव साय इसलिए बड़ा नाम है, क्योंकि अब तक चार बार के सांसद, तीन बार के विधायक और छत्तीसगढ़ में भाजपा के अध्यक्ष की कमान एवं केंद्र सरकार में राज्य मंत्री भी रह चुके हैं। 26 साल की उम्र में ही पहली बार विधायक बनने वाले विष्णुदेव के दिवंगत दादा बुधनाथ साय 1947 से 1952 तक विधायक रह चुके हैं। उनके दिवंगत ताऊ नरहरि प्रसाद साय भी दो बार विधायक और एक बार सांसद रह चुके हैं। विष्णुदेव साय ने ताजा चुनाव कुनकुरी विधानसभा सीट से लड़ा था, जिसमें उन्होंने 25 हजार 541 वोटों से जीत दर्ज की। कम बोलने और बेहद विनम्र माने जाने वाले विष्णुदेव साय को, पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह का बेहद करीबी माना जाता है। निश्चित ही उनकी मुख्यमंत्री की पारी ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं राजनीतिक परिपक्वता का उदाहरण बनेगी। 21 फरवरी 1964 को एक आदिवासी परिवार में जन्में विष्णुदेव साय ने अपनी 10वीं तक की पढ़ाई कुनकुरी के लोयला हायर सेकेंडरी स्कूल से की है।

अमित शाह ने चुनाव प्रचार के दौरान कहा भी था, विष्णुदेवजी हमारे अनुभवी कार्यकर्ता हैं, नेता हैं, सांसद रहे, विधायक रहे, प्रदेश अध्यक्ष रहे। एक अनुभवी नेता को भाजपा आपके सामने लाई है। आप इनको विधायक बना दो, उनको बड़ा आदमी बनाने का काम हम करेंगे। अमित शाह ने बड़ा आदमी बनाने का अपना वायदा इतना जल्दी पूरा कर दिया है। वैसे भी 32 फ़ीसद आदिवासी जनसंख्या वाले छत्तीसगढ़ की विधानसभा में आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित 29 सीटों में से 17 पर भाजपा के कब्जे के बाद माना जा रहा था कि किसी आदिवासी विधायक को भाजपा मुख्यमंत्री या उप मुख्यमंत्री बना सकती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने सत्ता में आने के बाद से ही भ्रष्टाचार को बड़ा मुद्दा बनाया है। भ्रष्टाचार में लिप्त विपक्षी पार्टी के नेताओं के घरों पर ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स की रेड हो रही है। झारखंड के कांग्रेस के सांसद धीरज साहू के घर पर इनकम टैक्स की रेड और 500 करोड़ रुपए की बरामदी हुई है। इसलिये भाजपा ईमानदार नेताओं को आगे लाना चाहती है, विष्णुदेव साय जमीन से जुड़े हैं, आदिवासी हैं और लंबे समय से राजनीतिक जीवन में रहने के बावजूद भ्रष्टाचार के आरोपों से दूर हैं। ऐसे में वे भाजपा के इस कैटेगरी में एकदम फिट बैठे और मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार भी। ईमानदारी के साथ विनम्रता भी उनकी बड़ी विशेषता है। एक दिन पहले उन्होंने कहा- "विनम्रता को कमज़ोरी नहीं मानना चाहिए। मैं तो इसे अपनी ताक़त मानता हूं और मेरी कोशिश रहेगी कि आजीवन विनम्र बना रहूं।"

राजनीतिक स्वार्थ के चलते आजादी के बाद से जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासियों को हमेशा से दबाया और कुचला जाता रहा है जिससे उनकी जिन्दगी अभावग्रस्त ही रही है। कांग्रेस ने आदिवासी के नाम पर सत्ता तो अनेक बार हासिल की, लेकिन उनके कल्याण के लिये कोई ठोस काम नहीं किये। जबकि आदिवासी समुदाय को कांग्रेस विचारधारा का ही माना जाता रहा है, लेकिन नरेन्द्र मोदी ने अपनी सूझबूझ एवं विवेक से आदिवासी लोगों का दिल जीता है। वर्ष 2007 में मुख्यमंत्री रहते नरेन्द्र मोदी गुजरात के आदिवासी इलाके कवांट में जैन संत गणि राजेन्द्र विजयजी के नेतृत्व में एक समारोह में 15 हजार करोड़ की वनबंधु योजना की शुरुआत की। इन दिनों इन्हीं जैन मुनि की चर्चा चुनाव सभाओं में एवं गुजरात की एक सभा में प्रधानमंत्री ने की। उनके मन में आदिवासी कल्याण की भावना है। राजनीति जोड़तोड़ की दृष्टि से देखा जाये तो कांग्रेस जहां मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण एवं तुष्टिकरण कर रही है तो भाजपा के लिये आदिवासी समुदाय ही रौशनी बनते हुए दिख रहे हैं। निश्चित ही आगामी लोकसभा चुनाव में इन आदिवासी वोटों की महत्वपूर्ण भूमिका बनने वाली है।

जब भाजपा हिन्दू राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर है, ऐसे में आदिवासी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। आदिवासियों में एक बड़ी समस्या धर्म परिवर्तन की है। प्रलोभनों एवं साम्प्रदायिक ताकतों के कारण कई आदिवासी अपने धर्म को बदलकर आदिवासी समाज से बाहर हो रहे हैं जिसमें ईसाई धर्म को सर्वाधिक स्वीकार गया है। ईसाई मिश्नरियों ने भारत के आदिवासी क्षेत्र छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, ओडिशा, अंडमान निकोबार, झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र में धर्मांतरण के लिये विद्यालयों एवं छात्रावासों में सफल अभियान चलाया है। ऐसे में आदिवासी की अपनी संस्कृति एवं उनका अस्तित्व खतरा में आ गया। आदिवासी अर्थात जो प्रारंभ से वनों में रहता आया है। करीब 400 पीढ़ियों पूर्व सभी भारतीय वन में ही रहते थे और वे आदिवासी थे परंतु विकासक्रम के चलते पहले ग्राम बने फिर कस्बे और अंत में नगर, महानगर। यहीं से विभाजन होना प्रारंभ हुआ। जो वन में रह गए वे वनवासी, जो गांव में रह गए वे ग्रामवासी और जो नगर में चले गए वे नगरवासी कहलाने लगे। भारत में लगभग 25 प्रतिशत वन क्षेत्र है, इसके अधिकांश हिस्से में आदिवासी समुदाय रहता है। लगभग नब्बे प्रतिशत खनिज सम्पदा, प्रमुख औषधियां एवं मूल्यवान खाद्य पदार्थ इन्हीं आदिवासी क्षेत्रों में हैं। भारत में कुल आबादी का लगभग 11 प्रतिशत आदिवासी समाज है। इसी बड़ी आबादी को प्रभावित करने के लिये द्रोपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाना एवं विष्णुदेव को मुख्यमंत्री बनाना भाजपा की परिपक्व राजनीति को दर्शाता है। विष्णुदेव साय का निर्णय राज्य में आदिवासी वोटर्स को ध्यान में रखते हुए सामने आया है। इससे पहले भी आदिवासी वोटर को साधने के लिए भाजपा ने कई सकारात्मक घोषणाएं की हैं। ऐसे में कहा जा सकता है कि भाजपा एक सोची-समझी रणनीति के तहत आगे बढ़ रही है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में आदिवासी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसे अनेक महान आदिवासी हुए हैं जिन्होंने भारत की मिट्टी एवं उसके स्वतंत्र अस्तित्व-आजादी के लिए अपना बलिदान एवं महान योगदान दिया। ऐसे महान वीर आदिवासियों से भारत का इतिहास समृद्ध है, जिनमें अप्पा साहब, तात्या टोपे, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जयपाल सिंह मुण्डा, शहीद वीर नारायण सिंह, शहीद गंडाधुरा, शहीद रानी दुर्गावती, शहीद बिरसा मुंडा, शहीद सिद्धों, कानु, शहीद तिलका मांझी, शहीद गेंद सिंह, झाड़ा सिरहा जैसे महान आदिवासियों ने अपना बलिदान देकर समाज एवं देश के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। फिर क्या कारण है कि इस जीवंत एवं मुख्य समाज को देश की मूल धारा से काटने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं। आजादी के बाद बनी सभी सरकारों ने इस समाज की उपेक्षा की है। यही कारण है कि यह समाज अनेक समस्याओं से घिरा है। भाजपा आदिवासी समाज के अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने के प्रयासों को नियंत्रित करने एवं सक्रिय होकर आदिवासी कल्याण की योजनाओं को लागू करने में जुटी है। निश्चित तौर पर लोकसभा चुनाव में आदिवासी वोट काफी अहम होगा। भाजपा ने छत्तीसगढ़ में फिर आदिवासी कार्ड खेला है। विष्णुदेव साय प्रभावी आदिवासी नेता हैं और आदिवासी समुदाय में उनकी बड़ी पकड़ है। भाजपा रणनीति के तहत आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग को साधने की कोशिश शुरू कर दी है जिसके चमत्कारी परिणाम आयेंगे।

कम मेंटेनेंस में बेहतर परफॉरमेंस देती है Kia की ये Compact SUV , स्टडी में हुआ खुलासा

Kia India ने दावा किया है कि उनकी Sonet कॉम्पैक्ट एसयूवी अपने सेगमेंट के अन्य मॉडलों की तुलना में बेहतर वैल्यू फॉर मनी ऑप्शन है। इस हिसाब से Kia Sonet पेट्रोल ज्यादा बेहतर विकल्प बन जाता है। स्टडी में दावा किया गया है कि किआ सोनेट का अवशिष्ट मूल्य(Residual Value) सबसे अधिक है जो पेट्रोल और डीजल दोनों वेरिएंट में सेगमेंट के औसत से तीन प्रतिशत अधिक है।

दिल्ली। Kia India ने दावा किया है कि उनकी Sonet कॉम्पैक्ट एसयूवी अपने सेगमेंट के अन्य मॉडलों की तुलना में बेहतर वैल्यू फॉर मनी ऑप्शन है। कोरियन कार निर्माता कंपनी ने Frost & Sullivan की एक स्टडी का हवाला देते हुए कहा है कि सोनेट भारतीय पैसेंजर वाहन बाजार के कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में सबसे कम मेंटेनेंस कॉस्ट के साथ आती है।

Kia Sonet है बेस्ट कॉम्पैक्ट एसयूवी!

Kia India ने अपनी विज्ञप्ति में यह भी दावा किया कि पेट्रोल से चलने वाली सोनेट डीजल से चलने वाले मॉडल की तुलना में पैसे के लिए बेहतर मूल्य प्रदान करती है। कार निर्माता ने दावा किया कि डीजल से चलने वाली सोनेट सेगमेंट के अन्य मॉडलों की तुलना में 14 प्रतिशत कम रखरखाव लागत प्रदान करती है, जबकि पेट्रोल से चलने वाली सोनेट सेगमेंट के औसत से 16 प्रतिशत कम रखरखाव लागत प्रदान करती है।

Kia Sonet को खास बनाती हैं ये बातें

इस हिसाब से Kia Sonet पेट्रोल ज्यादा बेहतर विकल्प बन जाता है। स्टडी में दावा किया गया है कि किआ सोनेट का अवशिष्ट मूल्य(Residual Value) सबसे अधिक है, जो पेट्रोल और डीजल दोनों वेरिएंट में सेगमेंट के औसत से तीन प्रतिशत अधिक है।

देश-विदेश में जबरदस्त मांग

किआ इंडिया ने सितंबर 2020 में भारत में सोनेट कॉम्पैक्ट एसयूवी लॉन्च की थी। लॉन्च के कुछ ही समय के अंदर इस एसयूवी को ग्राहकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली और अभी तक इसका क्रेज बरकरार है। कंपनी का दावा है कि उसने भारत और विदेशी बाजारों में सोनेट एसयूवी की 3.65 लाख से अधिक यूनिट बेची हैं। आपको बता दें कि कंपनी इसे 14 दिसंबर को नए अवतार में पेश करने के लिए तैयार है।

Hyundai Creta facelift अगले महीने भारत में होगी लॉन्च, जानिए संभावित डिजाइन, फीचर्स और अन्य डिटेल्स

Hyundai Creta facelift के टेस्टिंग म्यूल्स को कई बार भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इसे अपडेटेड एलईडी हेडलाइट सेटअप एक बड़ा रेडिएटर ग्रिल और नई एलईडी टेल लाइट्स मिलने की उम्मीद है। फ्रंट-एंड में संभवतः पैरामीट्रिक ज्वेल ग्रिल डिजाइन दी जाएगी। ये कॉम्पैक्ट एसयूवी 16 जनवरी 2024 को अपनी शुरुआत करने के लिए पूरी तरह तैयार है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में Hyundai Creta की जबरदस्त मांग है। साल 2020 में पहली बार लॉन्च की गई हुंडई की ये एसयूवी जल्द ही नए अवतार में पेश होने के लिए तैयार है। Hyundai Creta Facelift 16 जनवरी, 2024 को अपनी शुरुआत करने के लिए पूरी तरह तैयार है। आइए, जान लेते हैं कि नए अपडेट में क्या कुछ नया हो सकता है।

एक्सटीरियर

हुंडई क्रेटा फेसलिफ्ट के टेस्टिंग म्यूल्स को कई बार भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इसे अपडेटेड एलईडी हेडलाइट सेटअप, एक बड़ा रेडिएटर ग्रिल और नई एलईडी टेल लाइट्स मिलने की उम्मीद है। फ्रंट-एंड में संभवतः पैरामीट्रिक ज्वेल ग्रिल डिजाइन दी जाएगी। वहीं, इसकी पूरी स्टाइलिंग हुंडई की नवीनतम 'पैरामीट्रिक डायनेमिक्स' डिजाइन लैंग्वेज को अपनाएगी। इसके अलावा, ये एसयूवी एक नए अलॉय व्हील डिजाइन को भी स्पोर्ट करेगी, जिसका आकार 17 या 18 इंच तक जाने की उम्मीद है।

इंटीरियर

Hyundai Creta Facelift के अंदर ज्यादा बदलाव की उम्मीद नहीं है, लेकिन हम नई सीट अपहोल्स्ट्री के साथ केबिन के लिए एक नई कलर थीम की उम्मीद कर सकते हैं। लेआउट को संभवतः आगे बढ़ाया जाएगा, लेकिन क्रेटा फेसलिफ्ट संभवतः नए ऑल डिजिटल 10.25-इंच डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले से लैस होगी। 10.25 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम संभवतः बरकरार रखा जाएगा।

इंजन

हुंडई क्रेटा को फिलहाल 1.5-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल मोटर के साथ पेश कर रही है, जो 113 एचपी की अधिकतम पावर और 144 एनएम का पीक टॉर्क पैदा करता है। साथ ही 1.5-लीटर डीजल इंजन भी है, जो 114 एचपी की पावर और 250 एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। नई क्रेटा में एक नए 1.5-लीटर टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन को शामिल किया जा सकता है।

Ather 450X Apex को 2 हजार रुपये का टोकन अमाउंट देकर ऐसे करें बुक, मार्च 2024 से शुरू होगी डिलीवरी

Ather ने 450X एपेक्स के लिए बुकिंग शुरू कर दी है। इच्छुक ग्राहक एथर की वेबसाइट के माध्यम से 2500 का टोकन अमाउंट देकर ये इलेक्ट्रिक स्कूटर बुक कर सकते हैं। इसकी डिलीवरी मार्च 2024 में शुरू होगी। टीजर में 450X एपेक्स को कैमोफ्लैग में एक ड्रैग रेस में मौजूदा 450X को पछाड़ते हुए दिखाया गया है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। Ather Energy जल्द ही एक नया 450X इलेक्ट्रिक स्कूटर पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने इसे Ather 450X Apex नाम दिया है। इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन निर्माता ने पहले ही इलेक्ट्रिक स्कूटर के नए टीजर्स को जारी करना शुरू कर दिया है।

Ather 450X Apex की बुकिंग शुरू

एथर ने 450X एपेक्स के लिए बुकिंग शुरू कर दी है। इच्छुक ग्राहक एथर की वेबसाइट के माध्यम से 2,500 का टोकन अमाउंट देकर ये इलेक्ट्रिक स्कूटर बुक कर सकते हैं। इसकी डिलीवरी मार्च 2024 में शुरू होगी।

Ather 450X Apex में क्या नया?

कंपनी द्वारा पेश किए गए टीजर में इस स्कूटर को एक नए राइडिंग मोड के साथ देखा जा सकता है। इसे Warp+ कहा जाएगा, जिसका मतलब है कि यह मौजूदा Warp मोड के ऊपर होगा। उम्मीद है कि Warp+ राइडिंग मोड 450X Apex में Warp मोड की जगह लेगा।

टीजर में 450X एपेक्स को कैमोफ्लैग में एक ड्रैग रेस में मौजूदा 450X को पछाड़ते हुए दिखाया गया है। ये ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि 450X भारतीय बाजार में सबसे तेज इलेक्ट्रिक स्कूटरों में से एक है। 450X एपेक्स की टॉप स्पीड बहुत बेहतर होने वाली है। मौजूदा 450X को 0-40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ने में 3.3 सेकंड का समय लगता है।

टीजर में क्या दिखा?

टीजर में यह भी बताया गया है कि राइडर को ब्रेक का ज्यादा इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं होगी। ये संभवतः ब्रेक रिजनरेटिव के मल्टी-लेवल की ओर एक संकेत है। इसलिए, ब्रेक रिजनरेटिव के स्तर को बढ़ाने के लिए राइडर थ्रॉटल को दूसरी तरफ मोड़ सकता है। इससे इलेक्ट्रिक स्कूटर की राइडिंग रेंज को बेहतर बनाने में भी मदद मिलेगी।

फिलहाल, यह पता नहीं चल पाया है कि एथर बैटरी पैक और इलेक्ट्रिक मोटर में क्या-क्या बदलाव करेगा। इसके टीजर में इलेक्ट्रिक स्कूटर को छुपाया गया था, इसलिए कॉस्मेटिक बदलावों का भी खुलासा नहीं किया गया है। हालांकि, यह उम्मीद की जाती है कि निर्माता पारदर्शी विकल्प की पेशकश करेगा क्योंकि एथर एनर्जी के सीईओ तरुण मेहता ने पुष्टि की है कि पारदर्शी रंग विकल्प की वापसी होगी।

लोकसभा चुनावों में सोशल मीडिया की भूमिका

रमेश पठानिया

33 करोड़ भारतीय इंस्टाग्राम पर हैं, जो प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। फेसबुक पर 32 करोड़ लोग और ट्विटर पर 26 करोड़ लोग हैं। ये आंकड़े किसी भी पार्टी के लिए आने वाले चुनावों में चुनाव को एक निश्चित दिशा देने के लिए काफी हैं। इस बात में दो राय नहीं कि आने वाले लोकसभा चुनावों में हर राजनीतिक दल सोशल मीडिया का इस्तेमाल करेगा'.

वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में सोशल मीडिया प्लेटफार्म अपनी अहम भूमिका निभाएंगे। भारतीय जनता पार्टी, जो विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है, की यह नीति रहेगी कि देश के 800 मिलियन या 80 करोड़ लोग, जो भारतीय जनता पार्टी की लोक कल्याण नीतियों से लाभान्वित हुए हैं या हो रहे हैं, वे आने वाले चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को वोट दें, उसका समर्थन करें। इसका उदाहरण हाल ही में पांच राज्यों में हुई चुनावी गतिविधियां थीं, जिनमें सोशल मीडिया का भरपूर प्रयोग किया गया। सोशल मीडिया समांतर मीडिया, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक से कहीं आगे है। हर नागरिक, जिसके पास फोन है, वह अपने फोन का प्रयोग कर किसी भी तरह की जानकारी अपने खास समूहों में बांट सकता है। लोग इसका दुरुपयोग भी करते हैं, लेकिन आप किसी निर्धारित नीति के अंतर्गत इसका प्रयोग करते हैं तो यह आपके हित में भी काम कर सकता है। देश में काम कर रही सभी राजनीतिक पार्टियों में भारतीय जनता पार्टी तकनीकी रूप से सबसे आगे है। अभी तक भारतीय जनता पार्टी ने जिला स्तर पर 300 काल सेंटर स्थापित किए हैं जहां पर आप फोन करके भारतीय जनता पार्टी के सदस्य बन सकते हैं। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा आने वाले चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में वोटिंग प्रतिशत में बढ़ोतरी करने के लिए सोशल मीडिया, तकनीक और साधनों का प्रयोग करने के लिए काम कर रहे हैं। छात्र राजनीति से अपना राजनीतिक जीवन शुरू करने वाले जगत प्रकाश नड्डा की युवाओं में खास पकड़ है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और भारतीय जनता युवा मोर्चा से जुड़े कार्यकर्ता उन्हें हर कीमत पर अपना योगदान देना चाहते हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र राजनीतिक संगठन बन गया है जिसका लाभ पार्टी को मिलेगा। देश के गृह मंत्री श्री अमित शाह ने भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से अपना राजनीतिक सफर शुरू किया था। यह बात उन्होंने हाल ही में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के वार्षिक उत्सव में कही। इस छात्र संगठन से आए बहुत से योग्य लोग केंद्र सरकार में शामिल हैं। हाल ही में पांच राज्यों में हुए चुनावों से आए नतीजों ने यह साबित कर दिया कि सोशल मीडिया चुनावों को एक नई दिशा दे सकता है। राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी ने अपने सोशल मीडिया के संसाधनों से अच्छी बढ़त हासिल की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री श्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने अनथक रैलियां की और पार्टी को अभूतपूर्व विजय दिलाई। भारतीय जनता पार्टी ने आने वाले लोकसभा चुनावों की तैयारी युद्ध स्तर पर शुरू कर दी है। गृहमंत्री श्री अमित शाह ने पिछले सप्ताह एक बड़ी रैली को संबोधित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री श्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा की यह त्रिमूर्ति पार्टी के हर कार्यकर्ता के दिल में है। सोशल मीडिया के सभी प्लेटफॉर्म्स पर ये तीनों देश के अधिकतर लोगों से जुड़े हुए हैं। यही बात इन्हें विपक्षी दलों के नेताओं से अलग करती है। भारतीय जनता पार्टी की तेलंगाना में हार से भले ही कांग्रेस को कुछ सांत्वना मिली हो, लेकिन मध्यप्रदेश में कांग्रेस को बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा। छत्तीसगढ़ में भी वह सरकार को बचा नहीं सके। राजस्थान में कांग्रेस को पूरी उम्मीद ही नहीं, विश्वास था कि वह सरकार को फिर से स्थापित कर पाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत और श्री सचिन पायलट के बीच का मनमुटाव वोटों का प्रतिशत भारतीय जनता पार्टी की तरफ ले गया। सोशल मीडिया के व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, फेसबुक और एक्स जैसे प्लेटफॉर्म्स पर यह मतभेद खासे नजर आए, जिसका खामियाजा कांग्रेस पार्टी को भुगतना पड़ा। जहां तक इंडी अलायन्स या गठबंधन का प्रश्न है, ऐसा लगने लगा है कि यह किसी भी दिशा में नहीं जा रहा। मानो चुनावी युद्ध के रथ को 100 अश्व खींच रहे हों और सभी अलग दिशा में भाग रहे हैं, जो ज्यादा देर तक नहीं चल पाएगा। पांच राज्यों के चुनावों में श्री मल्लिकार्जुन खड़गे इतने प्रभावशाली नहीं रह पाए। अधिकतर लोगों को लगता है कि कांग्रेस पार्टी को फिर से अपने संगठन में बदलाव करने होंगे ताकि आने वाले लोकसभा चुनावों में वे देश में अपनी पार्टी की बिगड़ती छवि को सुधार सकें। यही नहीं, देश के प्रधानमंत्री के लिए अपशब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए। पनौती शब्द का प्रयोग इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी को काफी महंगा पड़ा।

वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों की घोषणा आने वाले कुछ महीनों में कभी भी हो सकती है। इंडी गठबंधन, भारतीय जनता पार्टी और कई क्षेत्रीय दल 18वीं लोकसभा के लिए चुनाव मैदान में अपनी रणनीतियों के साथ उतरेंगे। लेकिन भारतीय जनता पार्टी के संगठन की भूमिका उन्हें पहले से ही बढ़त दे चुकी है, पांच राज्यों में से तीन राज्यों में विजय दिला कर। भारतीय जनता पार्टी का हर कार्यकर्ता इस बढ़त का फायदा उठा कर अभी से लोकसभा चुनावों की तैयारी में जुट गया है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत जैसे देश में 54 करोड़ के करीब लोग व्हाट्सऐप पर हैं। आपसी बातचीत का यह सबसे बड़ा माध्यम बन कर उभरा है। और सबसे बड़ी बात यह कि यह निशुल्क है। 33 करोड़ भारतीय इंस्टाग्राम पर हैं, जो प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। फेसबुक पर 32 करोड़ लोग और ट्विटर पर 26 करोड़ लोग हैं। ये आंकड़े किसी भी पार्टी के लिए आने वाले चुनावों में चुनाव को एक निश्चित दिशा देने के लिए काफी हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं कि आने वाले लोकसभा चुनावों में हर राजनीतिक दल सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल करेगा। लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने इसमें पहले ही अपने संगठन के माध्यम से बढ़त हासिल कर ली है, जिसका श्रेय इसके शीर्ष नेतृत्व को अवश्य ही जाता है।

संपादक की कलम से

आदिवासी की ताजपोशी

आरएसएस के समर्पित कार्यकर्ता, प्रधानमंत्री मोदी की प्रथम कैबिनेट के साथी, चार बार के लोकसभा सांसद और आदिवासी समाज के प्रमुख नेता विष्णुदेव साय छत्तीसगढ़ के नए मुख्यमंत्री होंगे। वह भाजपा और राज्य के प्रथम आदिवासी मुख्यमंत्री होंगे। वैसे छत्तीसगढ़ के सर्वप्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी भी खुद को आदिवासी ही कहते रहे, लेकिन 2019 में अदालत ने उनका 'अनुसूचित जनजाति' वाला प्रमाण-पत्र 'अमान्य' कर दिया था, लिहाजा प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवहार में विष्णुदेव ही राज्य के प्रथम आदिवासी मुख्यमंत्री माने जाएंगे। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव और विजय शर्मा को उपमुख्यमंत्री बनाया जाना तय हुआ है। छत्तीसगढ़ के लगातार तीन बार मुख्यमंत्री रहे डॉ. रमन सिंह को 'विधानसभा अध्यक्ष' का दायित्व सौंपा जाएगा। विष्णुदेव साय भाजपा-संघ परिवार के मंजे हुए नेता हैं, क्योंकि उन्होंने सरपंच से लेकर मुख्यमंत्री तक का 'चरमोत्कर्ष' छुआ है। इन विधानसभा चुनावों में भाजपा ने आदिवासियों का नया वोट बैंक तैयार कर कांग्रेस के जबड़े से जीत छीनी है। चुनाव के किसी भी सर्वे में भाजपा की जीत के आसार नहीं थे। कांग्रेस के लिए सत्ता में बने रहने के स्पष्ट अनुमान लगाए गए थे, लेकिन जनादेश घोषित हुआ, तो सरगुजा क्षेत्र की सभी 14 सीट और बस्तर की 12 में से 8 सीट भाजपा के हिस्से आईं। इसे 'नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्र' भी माना जाता है। कांग्रेस का पुराना, परंपरागत आदिवासी जनाधार ही ध्रुवीकृत हो गया। चूंकि भाजपा ने 2022 में ही आदिवासी नेता द्रौपदी मुर्मू को देश का राष्ट्रपति निर्वाचित कराया था, आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन को 'राष्ट्रीय जनजाति दिवस' घोषित किया था, नतीजतन आदिवासियों के ध्रुवीकरण के ये दो बुनियादी कारण साबित हुए। इसके अलावा, आरएसएस ने 'बनवासी कल्याण आश्रम' के जरिए पुराने मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) में आदिवासियों के लिए व्यापक कार्य किए हैं। प्रधानमंत्री मोदी की 'गारंटियों' के साथ-साथ छत्तीसगढ़ भाजपा के नेताओं ने भी राज्य की करीब 33 फीसदी आबादी, यानी कुल 90 में से 30 विधानसभा सीट, को विश्वास दिलाया कि भाजपा ही उनकी हितैषी पार्टी है।

नतीजा सामने है। 2018 में इन आदिवासी बहुल इलाकों ने कांग्रेस को लबालब जनादेश दिया था। अब मोदी-शाह की भाजपा ने आदिवासियों के अलावा, ओबीसी, दलितों और महिलाओं के वोट बैंक सुनिश्चित कर लिए हैं। हाल ही में तीन राज्यों में जो जनादेश सामने आए हैं, उनमें इन समुदायों के बहुमत वोट भाजपा के पक्ष में आए हैं। यकीनन इससे लोकसभा चुनाव में भी पार्टी को फायदा मिलना चाहिए। यह सामाजिक संरचना भाजपा-संघ परिवार का 'राजनीतिक मॉडल' भी बन सकती है। क्या मप्र और राजस्थान में भी इसी तर्ज पर मुख्यमंत्रियों की ताजपोशी की जा सकती है? दरअसल इन तीनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों और संगठन के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही रहेगी कि 2024 के आम चुनाव में 65 लोकसभा सीट में से अधिकतम हिस्सा भाजपा की झोली में ही आए। लक्ष्य नरेंद्र मोदी को लगातार तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाने का है। मप्र की बारी तो आज ही है। जब आप यह संपादकीय पढ़ेंगे, तब तक मप्र का मुख्यमंत्री तय हो जाना चाहिए। मौजूदा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान राज्य में सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने 165 सीटों पर जनसभाएं कीं और आज भी हारी हुई सीटों पर लोकसभा के लिए प्रचार पर निकले हैं। आम धारणा यह है कि प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और भाजपा अध्यक्ष का राष्ट्रीय नेतृत्व अब नए चेहरे को उभारने के पक्ष में हैं। यही राजनीति राजस्थान में भी जारी है। दिलचस्प है कि दोनों राज्यों के प्रमुख नेताओं के खिलाफ कोई भी जन-लहर नहीं है। यदि नया चेहरा लाया जाता है, तो लोकसभा चुनाव में नुकसान भी संभव है। शेष दोनों राज्यों में ओबीसी और महिला को नेतृत्व सौंपा जाना चाहिए।

राय

जश्न की गारंटी

अंततः एक साल की सरकार ने अपनी उपलब्धियों की जमीन पर सत्ता हस्तांतरण की प्रासंगिकता साबित करने की हरसंभव कोशिश कर दी। धर्मशाला में सुक्खू सरकार बहुत कुछ अपने करीब खड़ा कर पाई, जबकि विपक्षी भाजपा की असलियत में प्रदेश हितों की अनदेखी का जिक्र हर वक्ता ने किया। मंच पर दर्द था, तो कहीं-कहीं वही नगाड़े लौट आए और धुनें बज उठीं, जो भाजपा से सत्ता छीन कर बजे थे। यह दीगर है कि जिस सत्ता ने कांग्रेस के चुनावी अभियान को प्रशस्त किया, उसके एक साल के जश्न में न प्रियंका गांधी दिखीं और न ही पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे मौजूद रहे। सरकार के बगल में बैठे प्रदेश कांग्रेस प्रभारी राजीव शुक्ला संवारते रहे और महफिल में कई चिराग जले। कुछ दिशाएं दिखीं, कुछ मजमून उभरे, लेकिन आर्थिक संसाधनों की कमी ने परेशान किया है। इसलिए हिमाचल में आपदा के जिक्र ने भाजपा के आक्रोश को बौना कर दिया। जनता के साथ संबोधन की भाषा, सरलता और तरलता के साथ मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अपनी गारंटियों के साथ कुछ कदम लिए, कुछ समय अवधि तय की, तो उन अड़चनों को साझा किया जिनको भाजपा बिसात मान कर खेलती रही। यानी प्रदेश ने आपदा की राहत में अपनी सारी संवेदना बिछाकर किसी तरह 45 सौ करोड़ बिछा दिए, लेकिन केंद्र हिमाचल की सिसकियों को नजरअंदाज करता रहा। धर्मशाला के जश्न में प्रदेश की वित्तीय स्थिति अपना दुखड़ा सुना गई, तो जयराम सरकार की आर्थिक कारगुजारी कहीं कपड़े धोती दिखाई दी। कर्ज की ओढनी के नीचे वर्तमान सरकार को पिछली सरकार की देनदारियां नसीब हुईं या इस बोझ के सदमे से जश्न की वजह बताई गई। जो भी हो, सरकार ने एक साल बाद सत्ता का कुनबा, संगठन का मलबा और गारंटियों का हलवा पुनः बांट दिया। सिलसिलेवार ढंग से यह बताने की कोशिश की गई कि गारंटियों के मायनों में सरकार के इरादे कितने स्पष्ट हैं और वर्तमान का सर्वश्रेष्ठ शीर्षासन सरकारी कर्मचारी के लिए किस तरह अमल में आया। सुक्खू सरकार सुखाश्रय से 680 करोड़ की स्टार्टअप योजना तक किस आशय व संवेदना से पहुंची है, इसे तसदीक करता जश्न आगामी साल के रथ पर सवार होकर तीन नई गारंटियों की मंजिल की ओर बढ़ गया, जहां किसान का दूध अब छह रुपए किलो की दर पर अतिरिक्त कमाई करेगा तथा गोबर की कमाई का धंधा भी मेहनत करेगा। लाहुल-स्पीति की महिलाओं को भाई सुखविंदर सुक्खू ने पंद्रह सौ रुपए की गारंटी दे दी तथा साठ साल से ऊपर महिला पेंशन योजना के कुल ग्यारह सौ की जगह पंद्रह सौ देने का करार यह जश्न कर गया। सुक्खू सरकार ने अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के आविष्कार में अपनी गारंटी को कलई कर ली और साथ ही साथ अगले साल की अमानत में दर्ज रोजगार का सरकारी आंकड़ा बीस हजार गिन लिया। जाहिर है धर्मशाला का जश्न कई पांव पर चला। अगर एक साल की सरकार ने कुछ गारंटियों को अमल में लाने का बोझ ढोया, तो पांव के छाले भी गिने जाएंगे और आगे के सफर में गारंटियों के नए मील पत्थर भी उठाने पड़ेंगे। सरकार ने विपक्ष की भाषा और बोली में अपने वक्त की लड़ाई और संघर्ष का लेखाजोखा रखा। आपदा में हुई सियासत के लिए कान मरोड़े गए, तो पुलिस भर्ती घोटाले और अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की पद्धति में ढूंढे गए सांपनाथों का जिक्र भी किया गया। व्यवस्था परिवर्तन के ऊंट किस बल बैठे, इसका तो जिक्र हुआ, लेकिन कांगड़ा में सत्ता के मरुस्थल पर कब हरियाली आएगी, इसका उल्लेख नहीं हुआ।

पांच राज्यों में चुनाव नतीजों के निहितार्थ

दोनों का मुकाबला बहुत बेमेल हो जाता है। 'इंडिया' के घटक जानते हैं कि कांग्रेस के कारण ही वे 'इंडिया' हैं, लेकिन वे जो जानते हैं, वह मानते नहीं हैं। इसलिए कोई बंगाल को तो कोई उत्तरप्रदेश को तो कोई तमिलनाडु को तो कोई 'बिहार' को 'इंडिया' मानकर चलता है। इस तरह सब बिखरी मानसिकता से एक होने की कोशिश करते हैं। यह असंभव की हद तक कठिन काम है। 2014 से लेकर अब तक भाजपा की रणनीति यह रही है कि वह अपना राजनीतिक आधार बनाने व बढ़ाने के लिए वक्ती नफा-नुकसान का हिसाब नहीं करती। राजनीति संभव संभावनाओं का खेल है। 2023 फिर से बताता है कि संभव संभावनाओं में असंभव संभावना छिपी होती है। भाजपा वैसी संभावनाओं को पकडने की हर संभव कोशिश कर, असंभव को साधती आ रही है। दूसरे संभव को असंभव बनाने के खेल से बाहर ही नहीं आ पाते। क्या 2024 इसी कहानी को दोहराएगा? देखना है कि कौन नए खरगोश बना व दिखा पाता है'

हाल के पांच राज्यों के चुनाव परिणाम देश की दोनों पार्टियों- भाजपा व कांग्रेस के तौर-तरीकों को भी उजागर करते हैं। ये बताते हैं कि इन पार्टियों ने किन तरीकों से अपनी-अपनी चुनावी समर लड़ी है। क्या हैं इन दोनों के फर्क, और इनका असर, इस आलेख में इसी विषय पर चिंतन की कोशिश करेंगे। कभी जादूगर का खेल देखा है? राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जादूगर के बेटे हैं, लेकिन जादू दिखा कोई दूसरा रहा है। पांच राज्यों में हुआ चुनाव ऐसी जादूगरी का नमूना है। अब जब चुनावी धूल बैठ चुकी है, घायल अपने घावों की साज-संभाल में लगे हैं, विजेता अपनी जीती कुर्सियां झाड़-पोंछ रहे हैं, हम जादू के पीछे का हाल देखने-समझने की कोशिश करें। मोदी-शाह ने जिस नई चुनावी शैली की नींव 2014 से डाली है, उसकी विशेषता यह है कि न उसका आदि है, न अंत! यह सतत चलती है। चुनाव की तारीख घोषित होने पर चुनावी-मुद्रा में आना, चुनाव की तारीख तक चुनाव लडना और फिर जीत-हार के मुताबिक अपना-अपना काम करना, ऐसी आरामवाली राजनीति का अभ्यस्त रहा है यह देश, इसके राजनीतिक दल! मोदी-शाह मार्का राजनीति इसके ठीक विपरीत चलती है। वह तारीखें देखकर नहीं चलती, नयी तारीखें गढ़ती है।

चुनावी सफलता की तराजू पर तौलकर वह अपना हर काम करती है। उनके लिए चुनाव वसंत नहीं है कि जिसका एक मौसम आता है, यह बारहमासी झड़ी है। उनके लिए विदेश-नीति भी चुनाव है, यूक्रेन-फिलस्तीन-गाजा-इसरायल भी और पाकिस्तान भी चुनाव हैं। जी-20 भी चुनाव है। खेल व खिलाड़ी भी चुनाव हैं। चंद्रयान भी चुनाव है, सरकारी तंत्र व धन भी चुनाव के लिए है। उनके लिए जनता भी एक नहीं, कई हैं जिनका अलग-अलग चुनावी इस्तेमाल है। मार्च 2018 में प्रधानमंत्री ने जनता का एक नया वर्ग पैदा किया था : विकास के लिए प्रतिबद्ध जिले! 112 जिलों की सूची बनी। ये जिले ऐसे थे जिनके विकास की तरफ कभी विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। जो बड़े राजनीतिक पहलवान हैं वे अपने व अपने आसपास के चुनाव क्षेत्रों के लिए सारे संसाधन बटोरने में मग्न रहते हैं। नए चुनाव क्षेत्रों का सर्जन किसी के ध्यान में भी नहीं आता। मोदी जी ने अपनी रणनीति में इसे शामिल किया और 112 जिलों की सूची बना दी। किसी ने नहीं समझा कि यह चुनाव की नई कांस्टीट्यूएंसी तैयार करने की योजना है। इन जिलों में से 26 जिले ऐसे थे जो मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान तथा तेलंगाना के 81 चुनाव क्षेत्रों में फैले थे। ये सभी अधिकांशतः आदिवासी व अन्य पिछड़े समुदायों के इलाके थे। पहली बार इन इलाकों को लगा कि कोई है जो इनका अस्तित्व मानता ही नहीं, बल्कि उन्हें आगे भी लाना चाहता है। यहां विकास की क्या कोशिशें हुईं, उनकी समीक्षा का यह मौका नहीं है। मौका है यह समझने का कि इन 81 चुनाव क्षेत्रों में भाजपा ने इस बार कांग्रेस को कड़ी टक्कर लगाई। 2018 में जहां इन क्षेत्रों में भाजपा ने बमुश्किल 23 सीटें जीती थीं, 2023 में उसने यहां 52 सीटें जीती हैं, पिछले के मुकाबले दोगुने से ज्यादा। यह अपने लिए नए चुनावी आधार गढने की योजना का एक हिस्सा था। स्मार्ट सिटी योजना, अलग-अलग समूहों को नकद सहायता की लगातार घोषणा आदि सब चुनाव के नए कारक हैं जिनके जनक मोदी जी हैं। इस बार पांच राज्यों के चुनाव को 2024 के बड़े चुनाव का पूर्वाभ्यास करार दिया गया था। कांग्रेस ने हिसाब लगाया कि कहां-कहां 'लंबी सत्ता का जहर' भाजपा को मार सकता है, कहां-कहां हमारी सरकार का 'अच्छा काम' हमें फायदा दे सकता है। कांग्रेस की नजर इस पर भी थी कि चुनाव का परिणाम ऐसा ही होना चाहिए कि 'इंडिया' में डंडा हमारे हाथ में रहे। यह गणित बुरा भी था, अपर्याप्त भी।

जब एक जादूगर अपने हैट से नए-नए खरगोश निकालकर दिखा रहा हो तब मजमा उस नट को कैसे देखता रह सकता है जिसे तनी हुई रस्सी पर संतुलन साधने का एक ही खेल आता है? और वह भी ऐसा कि संतुलन बार-बार डगमगाता भी रहता है! कांग्रेस राष्ट्रीय दल है तो सही, लेकिन उसके पास राष्ट्रीय सत्ता नहीं है। जो सत्ता है उसे भी वह संभाल नहीं पा रही है। उसके पास राष्ट्रीय पहचान व कद का एक ही नेता है जिसका नाम है राहुल गांधी! राहुल गांधी की जानी-अनजानी बहुत सारी विशेषताएं होंगी, लेकिन देश जो देख पा रहा है वह यह है कि वे अब तक राजनीतिक भाषा का ककहरा भी नहीं सीख पाए हैं। उनके पास वह राजनीतिक नजर भी नहीं है जो चुनावी विमर्श के मुद्दे खोज लाती है। कांग्रेस में दूसरा कोई पंचायत स्तर का नेता भी नहीं है। कांग्रेस के पास उसका कोई शाह, कोई योगी, कोई शिवराज, कोई हेमंता नहीं है। वह किसी को बनने भी नहीं देती। दूसरी तरफ भाजपा है। उसके पास भी एक ही 'राहुल' है : नरेंद्र मोदी! उनके पास हर मौसम की भाषा है, गिद्ध-सी वह राजनीतिक नजर है जो हर मुद्दे को अपने हित में इस्तेमाल करने की चातुरी रखती है। उनका कद इतना बड़ा 'बनाया' गया है कि उसे कोई छू नहीं सकता। फिर नीचे कई नेता हैं जिनका अपना आभा मंडल है। इन सबके साथ है, एक परिपूर्ण प्रचार-तंत्र, एक परिपूर्ण धन-तंत्र तथा एक परिपूर्ण मीडिया-तंत्र। कांग्रेस का सबसे बड़ा नेता कांग्रेसियों की नजर में भी पर्याप्त नहीं है, भाजपा का नेता भाजपाइयों की नजर में राजनीतिक नेता ही नहीं, अवतार भी है।

दोनों का मुकाबला बहुत बेमेल हो जाता है। 'इंडिया' के घटक जानते हैं कि कांग्रेस के कारण ही वे 'इंडिया' हैं, लेकिन वे जो जानते हैं, वह मानते नहीं हैं। इसलिए कोई बंगाल को तो कोई उत्तरप्रदेश को तो कोई तमिलनाडु को तो कोई 'बिहार' को 'इंडिया' मानकर चलता है। इस तरह सब बिखरी मानसिकता से एक होने की कोशिश करते हैं। यह असंभव की हद तक कठिन काम है। 2014 से लेकर अब तक भाजपा की रणनीति यह रही है कि वह अपना राजनीतिक आधार बनाने व बढ़ाने के लिए वक्ती नफा-नुकसान का हिसाब नहीं करती। राजनीति संभव संभावनाओं का खेल है। 2023 फिर से बताता है कि संभव संभावनाओं में असंभव संभावना छिपी होती है। भाजपा वैसी संभावनाओं को पकडने की हर संभव कोशिश कर, असंभव को साधती आ रही है। दूसरे संभव को असंभव बनाने के खेल से बाहर ही नहीं आ पाते। क्या 2024 इसी कहानी को दोहराएगा? देखना है कि कौन नए खरगोश बना व दिखा पाता है।

कुमार प्रशांत

हड्डी का स्वाद

लोकतंत्र के मन्दिर में घंटा-घडियाल बजाने के लिए एक बार पुनः चुने जाने पर वह फूले नहीं समा रहे थे। इसका कारण भी था। आखिर पाँचवीं बार किसी प्रदेश का मुख्यमंत्री होना कोई छोटी बात तो नहीं। इसमें कोई शक नहीं कि यह काम है तो मेहनत का। अभी सरकार बनने में कुछ विलम्ब था। लिहाज़ा वह गुनगुनी धूप में बैठ कर बंद आँखों से सर्दियों का आनन्द उठा रहे थे। मैं उन्हें बधाई देने के लिए उनके सरकारी आवास पर जा पहुँचा। बधाई स्वीकार करते हुए उन्होंने मुझे बैठने का इशारा किया। थोड़ी देर में बातों का सिलसिला चल पड़ा। मैंने उनसे पूछा कि उन्हें पाँचवीं बार जीतते हुए कैसा लग रहा है। वह सधे हुए स्वर में बोले, 'ठीक वैसे ही, जैसे फेल होने की तमाम आशंकाओं के मध्य कोई छात्र अच्छे नम्बरों से पास हो जाता है। मुझे यह अन्दाज़ा नहीं था कि लोगों के मध्य मेरी रुदाली का इतना फायदा होगा। भले लोग मुझे मामा कहते हैं और मैं उनका मामा हूँ भी। लेकिन शरद जोशी के व्यंग्य वाला मामा नहीं कि मेरे नहाते हुए कोई मेरे कपड़े लेकर भाग जाए। मैं पिछले बीस सालों से लोगों को मामा बना रहा हूँ। तब से लोग घाट पर कपड़े उतार कर नहा रहे हैं और मैं श्रीकृष्ण की तरह उनके वस्त्र हरण कर सत्ता के पेड़ पर चढ़ा हूँ। मैं उन्हें रेवड़ियाँ बाँट रहा हूँ। रेवड़ियाँ खाते वस्त्रविहीन लोग अपने कपड़े वापिस लेना भूल गए हैं। उनकी इसी ख़ुशफहमी का फायदा उठाते हुए मैं सत्ता की डाल पर बैठ कर राग दरबारी गा रहा हूँ। बहनों को बरगलाना जरा आसान होता है। उनकी देखा-देखी भाई भी पाले में आ जाते हैं।' वह साँस लेने के लिए रुके तो मैंने पूछा कि यह रिश्ता क्या कहलाता है।

वह बोले, 'सत्ता में केवल वोट का ही रिश्ता होता है। जिस तरह चलती बस में कंडक्टर को सवारी नजर आने पर उसे केवल रुपये दिखते हैं, उसी तरह लोग मुझे वोट नजर आते हैं। चुनावी लोकतंत्र में वोटों की संख्या मायने रखती है। लोगों का पूर्ण समर्थन नहीं। मैं केवल इस बात पर विश्वास करता हूँ कि सभी लोगों को पहली बार मूर्ख बना रहा हूँ। यह लोगों की मरज़ी पर निर्भर करता है कि वे इस बार मूर्ख बन रहे हैं, अगली बार बनेंगे या बार-बार। भीड़ का यही व्यवहार मेरी सफलता की कुंजी है।' मैंने शंकित हुए पूछा कि क्या ऐसा करना देश हित में है। वह बोले, 'आप मरे जग प्रलय। जब तक कुरसी है, जगत है। राजनीति में आदमी की कद्र तभी तक होती है, जब तक वह कुरसी पर है। देश की परवाह किसको है। न हमें न लोगों को। अगर हमें होती तो हम कज़र् लेकर घी पीने की जगह प्रदेश में ऐसे संसाधन विकसित न करते, जो स्थाई राजस्व के स्रोत होते। अगर लोगों को होती तो क्या वे हमारे कान पकड़ कर हम लोगों को ये काम करने को मजबूर न करते। सबको चुपड़ी रोटियाँ चाहिए। लेकिन अपनी-अपनी। वह भी बिना काम किए।

अगर लोगों को एक बार सब्सिडी या फ्री का खाने की आदत पड़ जाए तो कौन हाड़ तुड़ाना चाहता है। इसके बाद ज़ात, धर्म और सम्प्रदाय के छौंक से सब्सिडी और फ्री की योजनाएं सोने पर सुहागा हो उठती हैं। तुमने कुत्ते को देखा ही होगा। सौ बार लतियाए जाने पर भी अगर उसके सामने सूखी हड्डी फैंक दी जाए तो वह कूं-कूं करता हुआ, दुम हिलाते हुए बिना सोचे-समझे उसे ख़ून निकलने तक चूसता रहता है। स्वाद उसके अपने ख़ून का होता है और वह सोचता है कि हड्डी से निकल रहा है।' इतना सुनने के बाद मेरी कुछ और पूछने की हिम्मत नहीं हुई। उन्हें एक बार फिर बधाई देने के बाद बाहर आते हुए मुझे लगा कि मेरे गले से कूं-कूं की आवाज़ आ रही है। कहीं मेरी पूँछ तो नहीं निकल आई, यह देखने के लिए अपने पिछवाड़े पर हाथ फेरते हुए मैं तेज़ क़दमों से बाहर निकलने लगा।

पीए सिद्धार्थ

शेयर बेचकर 2250 करोड़ रुपये जुटाएगी SpiceJet, 4% से अधिक टूटा शेयर

एयरलाइन कंपनी स्पाइसजेट ने आज अपनी नियामक फाइलिंग में कहा कि वह शेयर बिक्री के जरिए 2250 करोड़ रुपये जुटाएगी। एक नियामक फाइलिंग में एयरलाइन ने कहा कि 2250 करोड़ रुपये का इस्तेमाल स्पाइसजेट की उपस्थिति और बाजार विस्तार को बढ़ाने के लिए किया जाएगा। इसके अलावा यह फंड कंपनी को मजबूत वित्तीय आधार प्रदान करेगा।

नई दिल्ली। एयरलाइन कंपनी स्पाइसजेट ने आज रेगुलेटरी फाइलिंग में बाताया कि वो शेयर बेचकर 2,250 करोड़ रुपये जुटाएगी। इसके लिए स्पाइसजेट के बोर्ड ने निजी प्लेसमेंट के आधार पर इक्विटी शेयर/इक्विटी वारंट जारी करने को मंजूरी दे दी है।

इसलिए कंपनी जुटा रही फंड

रेगुलेटरी फाइलिंग में एयरलाइन ने बताया कि 2250 करोड़ रुपये स्पाइसजेट की उपस्थिति और बाजार पहुंच को बढ़ाने के काम आएंगी। इसके अलावा इस फंड से कंपनी को मजबूत वित्तीय नींव मिलेगी।

सितंबर तिमाही में हुआ था घाटा

बीते सितंबर तिमाही के नतीजों के मुताबिक स्पाइसजेट को इस दौरान 428 करोड़ रुपये का नेट लॉस हुआ था। वहीं एक साल पहले की समान अवधि यानी वित्त वर्ष 23 के सितंबर तिमाही में कंपनी को 835 करोड़ रुपये का नेट लॉस हुआ था।

4 प्रतिशत के अधिक टूटा शेयर

आज स्पाइसजेट का शेयर 4.18 प्रतिशत यानी 2.53 रुपये टूटकर 58.04 पर बंद हुआ। वहीं आज शेयर बाजार भी लाल निशान पर बंद हुआ है। सेंसेक्स 377 अंक गिरकर 69,551 अंक गिरकर बंद हुआ और निफ्टी 90 अंक फिसलकर 20,906 के स्तर पर बंद हुआ।

आपको बता दें कि एयरलाइन ने कल ही यह जानकारी दी थी कि वो अपने शेयर एनएसई पर भी लिस्ट करने जा रही है। इस खबर के बाद एयरलाइन का शेयर 11 प्रतिशत से अधिक चढ़ा था।

सही दिशा में आगे बढ़ रही है देश की इकोनॉमी: निर्मला सीतारमण

केंद्र सरकार ने आम चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कुल 58378 करोड़ रुपये के अतिरिक्त व्यय के साथ कुल 1.29 लाख करोड़ रुपये की अनुपूरक मांगों का प्रस्ताव पेश किया जिसे मंजूरी मिल गई है। उन्होंने महंगाई की दर में और गिरावट आने को लेकर अभी भरोसा जताया। आइए पूरी खबर के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने आम चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। मंगलवर को लोकसभा में पारित अनुपूरक मांगों के ब्यौरे को देखने से इसका साफ पता चलता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कुल 58,378 करोड़ रुपये के अतिरिक्त व्यय के साथ कुल 1.29 लाख करोड़ रुपये की अनुपूरक मांगों का प्रस्ताव पेश किया, जिसे मंजूरी मिल गई है।

मनरेगा में लगेगी इतनी राशि

इसमें 20 हजर करोड़ रुपये ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार देने की गारंटी योजना (मनरेगा) के लिए है। उर्वरक सब्सिडी के लिए भी अतिरिक्त 13,351 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। अनुपूरक मांगों पर हुई परिचर्चा के दौरान वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था बिल्कुल सही दिशा में जा रही है।

तेजी से बढ़ रही इकोनमी

उन्होंने महंगाई की दर में और गिरावट आने को लेकर अभी भरोसा जताया। सीतारमण ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से आगे बढ़ती हुई प्रमुख इकोनमी बन चुका है। सरकार के लिए अभी सबसे बड़ी वरीयता समाजिक सुरक्षा है और यह बात अनुपूरक मांगों के जरिये व्यय के लिए जो प्रस्ताव किए गए हैं, उसमें भी साफ तौर पर दिखता है।

LIC को लेकर ये कहा

सरकारी कंपनी बीएसएनएल की खराब हालात को लेकर विपक्ष की तरफ से उठाए गए सवाल पर उन्होंने कहा कि असलियत में पूर्व की यूपीए सरकार के कार्यकाल में इस कंपनी की स्थिति बदहाल हुई जबकि मौजूदा सरकार ने इस कंपनी के लिए 11,850 करोड़ रुपये का प्रविधान किया है। उन्होंने मनरेगा का जिक्र किया, जिसके लिए 14,524 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि की मांग की गई है। वित्त मंत्री ने बताया कि वर्ष 2023-24 में सरकार मनरेगा के लिए कुल 80 हजार करोड़ रुपये का आवंटन करेगी। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि अगर भविष्य में जरूरत होगी तो इसे और बढ़ाया जा सकता है।

उज्ज्वला के लिए 8500 करोड़ रुपये का प्रस्ताव

वित्त मंत्री सीतारमण ने बताया कि गरीब परिवारों को एलपीजी कनेक्शन देने की योजना उज्ज्वला के लिए 8500 करोड़ रुपये का प्रस्ताव है। सितंबर, 2023 में केंद्र सरकार ने फैसला किया था कि अतिरिक्त 75 लाख परिवारों को और उज्जवला के तहत एलपीजी कनेक्शन दिए जाएंगे। उक्त राशि का इस्तेमाल इस फैसले को अमल में लाने के लिए किया जाएगा।

इसी तरह से इस वर्ष 80 करोड़ भारतीयों को मुफ्त में अन्न उपलब्ध कराने की योजना पीएमजीकेएवाइ के लिए 5500 करोड़ रुपये का प्रविधान किया गया है। सनद रहे कि हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस योजना को अगले पांच वर्षों तक जारी रखने का फैसला किया है।

इनसाइड

निवेशकों के लिए खुल गया आईआरडीए का आईपीओ, जानिए प्राइस बैंड, लॉट साइज और अन्य डिटेल्स

जब भी किसी कंपनी को बडे.फंड की आवश्यकता होती है तो वह शेयर बाजार में लिस्ट होना पंसद करती है। शेयर मार्केट में लिस्ट होने के लिए कंपनी को पहले अपना आईपीओ लॉन्च करना होता है। आज सरकारी कंपनी IREDA का आईपीओ भी निवेशकों के लिए खुलेगा।

नई दिल्ली। शेयर मार्केट में निवेश करने के लिए शेयर के साथ आईपीओ में भी इन्वेस्ट किया जा सकता है। शेयर बाजार में आईपीओ का सिलसिला अभी भी चालू है। आज सरकारी कंपनी IREDA का आईपीओ निवेशकों के लिए खुल गया है। यह आईपीओ 23 नवंबर 2023 (गुरुवार) तक ही है। इसका मतलब है कि आप इस आईपीओ में केवल 23 नवंबर 2023 तक ही इन्वेस्ट कर सकते हैं। इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (IREDA) का आईपीओ आज खुल गया है। कंपनी इस आईपीओ से 2,150.21 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रहे हैं। IREDA के आईपीओ का प्राइस बैंड 30 रुपये से 32 रुपये निर्धारित किया गया है। आज सुबह 10.30 बजे तक कंपनी का आईपीओ 0.26 टाइम सब्सक्राइब हो गया था। कंपनी ने एंकर निवेशकों से 643 करोड़ रुपये जुटाए हैं। बीएसई पर सोमवार देर रात अपलोड किए गए एक सर्कुलर के अनुसार, गोल्डमैन सैक्स, इंटीग्रेटेड कोर स्ट्रैटेजीज (एशिया), सोसाइटी जेनरल, जीएएम स्टार इमर्जिंग इक्विटी, बीएनपी पारिबा आर्बिट्रेज, कॉप्थॉल मॉरीशस और मून कैपिटल ट्रेडिंग एंकर निवेशकों में से हैं।

फिक्स्ड डिपॉजिट पर यह बैंक दे रहा है 7.80 प्रतिशत तक का ब्याज, यहां देखें लेटेस्ट इंटरेस्ट रेट

देश के प्रमुख बैंक Kotak Mahindra ने फिक्स्ड डिपोजिट (FD) पर ब्याज दर बढ़ा दी हैं। बैंक 2 करोड़ रुपये से कम तक के अमाउंट पर अलग अलग अवधि के लिए ब्याज पर 85 बेसिस पॉइंट तक की बढ़ोत्तरी की है। बैंक ने बताया कि वह 23 महीने तक की एफडी पर सीनियर सिटीजन को 7.80 प्रतिशत का इंटरेस्ट रेट ऑफर कर रहा है।

नई दिल्ली। कोटक महिंद्रा बैंक ने फिक्स डिपोजिट (एफडी) की ब्याज दरें बढ़ा दी हैं। बैंक ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए 2 करोड़ रुपये से कम अमाउंट की एफडी की ब्याज दरों में 7.80 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी की है। फिक्स्ड डिपोजिट की ब्याज दरें अलग-अलग अवधि के लिए 85 बेसिस पॉइंट बढ़ाई गई हैं।

Kotak Mahindra Bank ने बताया कि अब 23 महीने से 2 साल की अवधि के लिए सीनियर सिटीजन को एफडी पर 7.80 प्रतिशत तक का ब्याज मिल रहा है। दो से तीन साल की एफडी पर बैंक 7.65 प्रतिशत इंटरेस्ट रेट ऑफर कर रहा है।

इसके साथ ही रेगुलर कस्टमर जो दो करोड़ रुपये से कम रुपये एफडी में निवेश कर रहे हैं तो 3 से 4 साल के लिए बैंक ने ब्याज में 50 बेसिस पॉइंट की बढ़ोत्तरी की है। यानी ग्राहकों को 7 प्रतिशत तक का इंटरेस्ट रेट मिल रहा है। इसके साथ ही 4 से 5 साल के लिए भी बैंक 7 प्रतिशत का ब्याज दे रहा है। इससे पहले बैंक 6.25 प्रतिशत ब्याज दे रहा था।

Kotak Mahindra Bank की लेटेस्ट ब्याज दरें

23 महीने : रेगुलर कस्टमर्स के लिए 7.25 प्रतिशत; सीनियर सिटीजन के लिए 7.80 प्रतिशत

23 महीने 1 दिन से 2 साल : रेगुलर कस्टमर्स – 7.25 प्रतिशत; सीनियर सिटीजन – 7.80 प्रतिशत

2 साल से ज्यादा और 3 साल से कम : रेगुलर कस्टमर्स – 7.10 प्रतिशत; सीनियर सिटीजन – 7.65 प्रतिशत

3 साल से ज्यादा और 4 साल से कम : रेगुलर कस्टमर्स – 7.00 प्रतिशत; सीनियर सिटीजन – 7.60 प्रतिशत

4 साल से ज्यादा और 5 साल से कम : रेगुलर कस्टमर्स – 7.00 प्रतिशत; सीनियर सिटीजन – 7.60 प्रतिशत

2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने को तैयार भारत: एसएंडपी

वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल के अनुसार भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि वित्त वर्ष 2026-27 में देश की जीडीपी ग्रोथ 7 फीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है। जानिए क्या है भारत की वर्तमान स्थिति और तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए क्या किस पर होना चाहिए भारत की नजर।

नई दिल्ली। ग्लोबल रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने आज भारत के अर्थव्यवस्था को लेकर बड़ी और अच्छी खबर दी है। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने कहा कि भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि वित्त वर्ष 2026-27 में देश की जीडीपी वृद्धि 7 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है।

एसएंडपी ने कहा, अगले वित्त वर्ष (2024-25) में विकास दर 6.4 प्रतिशत रहेगी, इसके बाद अगले वित्त वर्ष में यह 6.9 प्रतिशत और 2026-27 में 7 प्रतिशत हो जाएगी। भारत 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए तैयार है, और हमें उम्मीद है कि यह अगले तीन वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था होगी।

वर्तमान में क्या है भारत की स्थिति?

आपको बता दें कि वर्तमान में भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यूएस, चीन, जर्मनी और जापान के बाद भारत का स्थान है।

एसएंडपी के मुताबिक भारत को अगला बड़ा वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने के लिए एक मजबूत लॉजिस्टिक्स ढांचा विकसित करना, सर्विस डॉमिनेटेड इकोनॉमी बनना होगा।

एसएंडपी ने कहा कि तेजी से बढ़ते घरेलू डिजिटल बाजार के कारण भारत अगले दशक के दौरान उच्च-विकास स्टार्टअप में खासकर वित्तीय और उपभोक्ता प्रौद्योगिकी में विस्तार को बढ़ावा दे सकता है। एसएंडपी ने आगे कहा कि ऑटोमोटिव क्षेत्र में, भारत विकास, बुनियादी ढांचे, निवेश और नवाचार के लिए तैयार है।

पहली बार IPO में करने जा रहे हैं निवेश? पैसे लगाने से पहले अपनाएं ये टिप्स

परिवहन विशेष न्यूज

यदि आप पहली बार किसी आईपीओ में निवेश करने की योजना बना रहे हैं तो आपको यह पता होना चाहिए की आईपीओ क्या है और इसमें पैसा डालने से पहले किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। जब कंपनियां पहली बार अपना शेयर जारी करती है उसे आईपीओ कहा जाता है। इसे सरल भाषा में निजी कंपनियों को पब्लिक होना भी कहा जाता है।

नई दिल्ली। वर्तमान में शेयर बाजार हर दिन नए रिकॉर्ड बना रहा है और बुलंदियों को छू रहा है। बाजार में तेजी के बीच कई कंपनियां अपना आईपीओ लेकर आ रही है। आपने भी अकसर अखबार या टीवी में सुना और देखा होगा की आईपीओ से निवेशकों की अच्छी कमाई होती है।

ऐसे में अगर आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो पहली बार आईपीओ में पैसा लगाने जा रहे हैं तो उससे पहले आपको विभिन्न बातों के साथ-साथ आईपीओ क्या होता है यह भी समझना पड़ेगा। आज हम आपके इस खबर में आईपीओ क्या है और इसमें पैसा लगाने से पहले किन बातों का ध्यान रखना चाहिए सब बताएंगे।

क्या होता है आईपीओ?

आगर आप किसी कंपनी के मालिक है और आपको अपने व्यापार को और अधिक बढ़ाना है तो उसके लिए आपको अधिक पैसे चाहिए होंगे। इसी पैसों को जुटाने और बाजार में लिस्ट होने के लिए कंपनी आईपीओ लेकर आती है। इसमें कंपनी अपने कुछ हिस्सेदारी (शेयर) जनता को बेचती है और उसके बदले पैसे लेते ही।

जब कोई कंपनी पहली बार जनता को स्टॉक बेचती है, तो उसे आईपीओ कहा जाता है। आईपीओ प्रक्रिया को कभी-कभी ₹सार्वजनिक होना₹ भी कहा जाता है।

पैसा लगाने से पहले इन बातों का रखें ध्यान

कंपनी के बारे में जानें

जब बात पैसों की आती है तो हमेशा सोच समझकर खर्च करना चाहिए। आईपीओ में पैसा लगाने से पहले कंपनी के बारे में जरूर रिसर्च कर ले। कंपनी का इतिहास, उसके प्रोडक्ट का प्रदर्शन, मैनेजमेंट टीम, कंपनी के प्रमोटर इत्यादि के बारे में अच्छे से जरूर पढ़ लें।

कंपनी के ड्राफ्ट को पढ़ें

जब भी कोई कंपनी बाजार में आईपीओ लाती है तो बाजार नियामक सेबी के पास अपना ड्राफ्ट जमा करती है। इसके रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (DRHP) के नाम से भी जाना जाता है।

इस ड्राफ्ट में कंपनी, कंपनी के शेयरधारक, कंपनी की वित्तीय स्थिति, कंपनी के कामकाज, कंपनी के उपर कर्ज, कंपनी पर चलने वाली कानूनी कार्रवाई, आईपीओ के जरिए जुटाए जाने वाले पैसे का इस्तेमाल कंपनी कहां करेगी इन सब की जानकारी मौजूद होती है। आईपीओ में निवेश करने से पहले इस ड्राफ्ट को ध्यान से पढ़ें।

स्टॉक मार्केट के रुझानों को स्टडी करें

पैसा लगाने से पहले शेयर बाजार के रुझानों का स्टडी करना जरूरी है। बाजार में तेजी है या मंदी यह जानना जरूरी है। आपको बता दें कि ज्यादातर कंपनियां बढ़ते बाजार में आईपीओ की पेशकश करती हैं।

रिस्क का विश्लेषण करें

निवेश करने से पहले हमेश रिस्क का विश्लेषण जरूर कर लें। आप कोई भी निवेश करें उसमें मुनाफे के साथ-साथ रिस्क होता है। इसलिए हमेशा कैलकुलेटेड रिस्क लें।

'भागीरथी साहित्य सम्मान'-2023,16-17 हरिद्वार में

परिवहन विशेष।एसडी सेठी। साहित्य, कला, संस्कृति की अलख जगाने के लिए टू मीडिया समूह हरिद्वार साहित्य महोत्सव-2023 का आयोजन करने जा रहा है। दो दिवसीय , 16-17 दिसंबर, दो सत्रों में चलने वाले इस कार्यक्रम को हरिद्वार के प्रसिद्ध श्री नीलकंठ धाम के सभागार में आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में साहित्य, कला, संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए जापान,न्यूयॉर्क एवं भारत के विभिन्न राज्यों के साहित्यकारो को सम्मानित किया जाएगा।इस समारोह के डॉ.अशोक मैत्रेय अध्यक्ष, इंद्रजीत शर्मा (न्यूयॉर्क)चीफ गेस्ट होगें। कार्यक्रम के स्वागत अध्यक्ष डॉ.ओम प्रकाश प्रजापति होगे। वहीं साहित्य सम्मान' से सम्मानित होने वाले करीब चार दर्जन साहित्यकारो का चयन किया गया है।इनमें प्रमुखतःविनोद पराशर,देवेन्द्र शर्मा 'देव'डॉ.सुक्ष्मलता महाजन,उषा श्रीवास्तव ओमप्रकाश प्रजापति ईशा महता,सुरेंद्र सिह रावत,फौजिया अफजल फिजा,विशाल पांडे,हिमांशु शुक्ल, समेत अन्य साहित्यकार शामिल है।

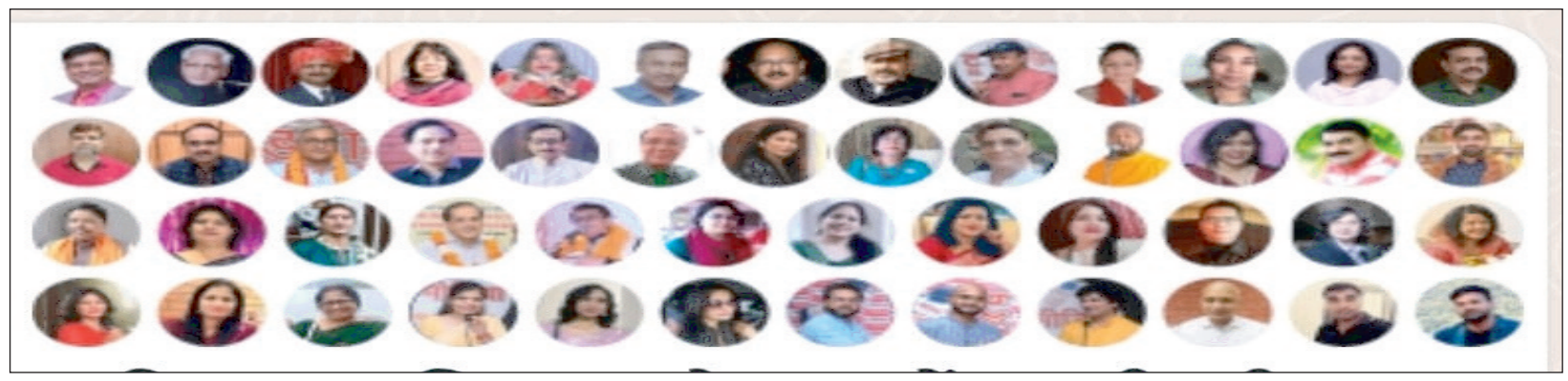

भजनलाल शर्मा राजस्थान के मुख्यमंत्री, दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा होंगे डिप्टी सीएम

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

राजस्थान के नए मुख्यमंत्री के नाम से पर्दा उठ गया है। छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश की तर्ज पर राजस्थान में भी मुख्यमंत्री के नाम ने सबको चौंका दिया। भजन लाल शर्मा राजस्थान के नए मुख्यमंत्री होंगे। विधायक दल की बैठक मे भजन लाल शर्मा के नाम पर फाइनल मुहर लगने के बाद उनके नाम का एलान कर दिया गया है। जयपुर के सांगानेर विधानसभा सीट से विधायक हैं। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की तरह राजस्थान में भी दिया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा को उप मुख्यमंत्री बनाया गया है। वासुदेव देवनानी विधानसभा अध्यक्ष होंगे।

इससे पहले दोपहर 1.45 बजे नए सीएम के ऐलान के लिए केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सहित तीन पर्यवेक्षक जयपुर पहुंचे। जयपुर एयरपोर्ट पहुंचने पर राजनाथ सिंह समेत अन्य नेताओं का राजस्थान के नेताओं की ओर से गर्मजोशी से स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में पूर्व सीएम वसुंधरा राजे और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी भी मौजूद रहे। इसके बाद भाजपा के प्रदेश कार्यालय में विधायकों और पर्यवेक्षकों का एक फोटो सेशन हुआ। फिर विधायक दल की बैठक हुई।गौरतलब है कि राजस्थान में मुख्यमंत्री का चेहरा कौन होगा। इसे लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन आलाकमान ने सारे कयायों पर विराम लगाते हुए भजन लाल शर्मा को राजस्थान की कुर्सी सौंपी है।

भजन लाल शर्मा जयपुर की सांगानेर विधानसभा से पहली बार विधायक चुने गए है। बीजेपी ने 2023 के विधानसभा चुनाव में वर्तमान विधायक अशोक लौहाटी का टिकट काट कर भजन लाल शर्मा को दिया। भजन लाल शर्मा ने कांग्रेस के पुष्पेंद्र भारद्वाज को 48081 वोटों से शिकस्त दी है।

भारतीय सेना के सैनिकों की बढ़ेगी मारक क्षमता, 70000 और सिग सॉयर असॉल्ट राइफल मिलेंगी

भारतीय सेना को 800 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की 70,000 से अधिक असॉल्ट राइफल खरीदने की मंजूरी ऐसे समय में मिली है, जब बल चीन के साथ सैन्य गतिरोध में तैनात हैं और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर व्यापक आतंकवाद रोधी अभियान चला रहे हैं।

भारतीय सेना के सैनिकों को मारक क्षमता बढ़ाने के लिए सत्तर हजार और सिग सॉयर असॉल्ट राइफल मिलेंगी। ये राइफल आतंकवाद विरोधी अभियानों और अन्य कर्तव्यों में तैनात सैनिकों को दी जाएंगी। हाल ही में आयोजित रक्षा मंत्रालय की एक उच्च स्तरीय बैठक में खरीद के लिए मंजूरी दी गई थी और इसमें सेना के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया था। सरकार के सूत्रों ने यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा, भारतीय सेना को 800 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की 70,000 से अधिक असॉल्ट राइफल खरीदने की मंजूरी ऐसे समय में मिली है, जब बल चीन के साथ सैन्य गतिरोध में तैनात हैं और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर व्यापक आतंकवाद रोधी अभियान चला रहे हैं।

भारत पहले ही इनमें से 70,000 से अधिक अमेरिकी निर्मित असॉल्ट राइफलों को शामिल कर चुका है, जिनका इस्तेमाल लद्दाख सेक्टर में चीन के मोर्चे पर और कश्मीर घाटी में भी बलों द्वारा किया जा रहा है। इन राइफलों को खरीदने की योजना बल ने शुरू में इसलिए बनाई थी क्योंकि वह लंबी दूरी की राइफल रखना चाहती थी।

फरवरी 2019 में अमेरिका के सिग सॉयर से 72,400 सिग 716 राइफलें खरीदी गईं, जिनमें से 66,400 थल सेना के लिए, 4,000 वायु सेना के लिए और 2,000 नौसेना के लिए थीं। सिग 716 असॉल्ट राइफल को इसकी उच्च क्षमता और विस्तारित रेंज के कारण कई उम्मीदवारों के बल पर चुना गया था। यह कथित तौर पर इंसास राइफल या एके-47 की तुलना में अधिक घातक है। अमेठी के पास ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में दो कंपनियों के संयुक्त उद्यम से तैयार की जा रही एके-203 भी भारतीय सेनाओं को जल्द मिलने वाली है। भारतीय बलों ने हाल ही में आतंकवादियों के खिलाफ और पारंपरिक अभियानों के लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण संख्या में रूसी एके-103 भी हासिल की है।

मोदी ने क्यों जताया ब्राह्मणों पर भरोसा, सनातन पर हमलों के बीच कितना कारगर होगा ये दांव?

पिछले कुछ समय से सनातन धर्म और ब्राह्मणों पर आपत्तिजनक टिप्पणियों की बाढ़ सी आ गई है। इंडिया गठबंधन में शामिल राजद के मंत्री-विधायक से लेकर दक्षिण भारत में तमिलनाडु सरकार में मंत्री तक ने सनातन धर्म को खत्म करने जैसी बातें कहीं...

ब्राह्मण कभी देश की राजनीतिक दिशा तय करते थे। मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू होने के बाद देश की सियासत का एक नया दौर शुरू हुआ और ब्राह्मण हाशिये पर चला गया। आज की राजनीतिक सच्चाई यही है कि उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक अनेक राजनीतिक दल ब्राह्मणों को कोस कर ही अपनी राजनीति आगे बढ़ा रहे हैं। इसका असर यह हुआ है कि कोई भी राजनीतिक दल ब्राह्मणों को प्रमुख भूमिका देने के लिए तैयार नहीं हैं। आज देश के किसी भी राज्य में ब्राह्मण मुख्यमंत्री की भूमिका में नहीं है। ऐसे दौर में प्रधानमंत्री मोदी ने भजनलाल शर्मा को राजस्थान का मुख्यमंत्री नियुक्त किया है। बड़ा प्रश्न यही है कि भाजपा ने यह दांव क्यों चला और इसका क्या असर होगा?

पिछले कुछ समय से सनातन धर्म और ब्राह्मणों पर आपत्तिजनक टिप्पणियों की बाढ़ सी आ गई है। इंडिया गठबंधन में शामिल राजद के मंत्री-विधायक से लेकर दक्षिण भारत में तमिलनाडु सरकार में मंत्री तक ने सनातन धर्म को खत्म करने जैसी बातें कहीं। चूंकि इंडिया गठबंधन जातीय जनगणना और ओबीसी आरक्षण को मुद्दा बनाकर आगामी लोकसभा चुनाव में मोदी का विजय अभियान रोकने की योजना बना रहा है, इन हमलों को भी उसी चुनावी दांव के रूप में देखा गया।

लेकिन इन हमलों के बाद भी यदि भाजपा ने ब्राह्मणों पर भरोसा जताया है, तो इसका सबसे बड़ा कारण यही रहा है कि कांग्रेस के कमजोर होने के बाद ब्राह्मण वर्ग भाजपा का कोर वोटर बनकर उभरा है। राम मंदिर आंदोलन से लेकर अब तक वह पूरी मजबूती के साथ भाजपा का समर्पित मतदाता बना हुआ है। यदि नरेंद्र मोदी को किसी समुदाय ने हिंदू हृदय सम्राट के तौर पर स्थापित किया है, तो यह काम ब्राह्मणों ने ही किया है।

इसी समय अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भी पूरा हो गया है। 22 जनवरी को इसका उद्घाटन भी प्रधानमंत्री मोदी के हाथों ही होना है। ऐसे में ब्राह्मणों को सम्मान देकर मोदी अपने इस सबसे प्रबल समर्थक वर्ग को अपने साथ जोड़े रखना चाहते हैं, यह माना जा सकता है। राजस्थान में 18 फीसदी से अधिक ब्राह्मण आबादी भी भजनलाल शर्मा को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनाने में अहम कारक साबित हुआ है।

समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने भी जब-जब ब्राह्मणों को अपने साथ जोड़ा, वे सत्ता के शिखर पर जा बैठीं। राष्ट्रीय जनता दल भी बिहार में ब्राह्मणों को अपने साथ जोड़ने की योजना बना रहा था, लेकिन जातिगत राजनीति के अंतर्विरोध के कारण ब्राह्मणों को जोड़ने की इन दलों की योजना स्थाई नहीं हो पा रही थी। वहीं, भाजपा ने सनातन, राम के साथ ब्राह्मणों को जोड़कर इस समुदाय को अपने साथ मजबूती से बांध लिया है।

अगर पत्नी कमा रही है तो इसका मतलब ये नहीं कि पति गुजारा भत्ता बिल्कुल नहीं देगा- दिल्ली हाईकोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि केवल इसलिए कि पत्नी कमा रही है पति को गुजारा भत्ता देने पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं है। न्यायमूर्ति वी कामेश्वर राव और न्यायमूर्ति अनूप कुमार मेंदीरत्ता की पीठ ने कहा कि भरण-पोषण करने का पति का दायित्व पत्नी की तुलना में अधिक है क्योंकि विभिन्न कानूनों में महिलाओं और बच्चों के लिए भरण-पोषण या अंतरिम भरण-पोषण देने का प्रावधान है।

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि केवल इसलिए कि पत्नी कमा रही है, पति को गुजारा भत्ता देने पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं है। न्यायमूर्ति वी कामेश्वर राव और न्यायमूर्ति अनूप कुमार मेंदीरत्ता की पीठ ने कहा कि भरण-पोषण करने का पति का दायित्व पत्नी की तुलना में अधिक है, क्योंकि विभिन्न कानूनों में महिलाओं और बच्चों के लिए भरण-पोषण या अंतरिम भरण-पोषण देने का प्रावधान है। लेकिन भरण-पोषण यथार्थवादी होना चाहिए।

पीठ ने कहा कि विवाह की अवधि के साथ-साथ पक्षों के आचरण, जो रिकॉर्ड में स्पष्ट है, को भी परिप्रेक्ष्य में रखने की जरूरत है। पीठ ने कहा कि अंतरिम गुजारा भत्ता का फैसला पार्टियों की ओर से दायर दलीलों और आय और संपत्ति के हलफनामे के आधार पर किया जाना चाहिए। प्रासंगिक कारकों के बीच संतुलन बनाना होगा क्योंकि मात्रा तय करने के लिए कोई सीधा तंत्र नहीं है।

अदालत एक पत्नी द्वारा पारिवारिक अदालत के आदेश को चुनौती देने वाली अपील पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें पति को नाबालिग बच्चे के रखरखाव के लिए पत्नी को 20 हजार रुपये प्रतिमाह भुगतान करने का निर्देश दिया गया था। जबकि पत्नी को पेंडेंट लाइट भरण-पोषण देने से इनकार कर दिया गया था।

दोनों पक्षों की शादी वर्ष 2000 में हुई थी। 2010 में उनको एक बेटी का जन्म हुआ। 2019 में पत्नी ने तलाक की याचिका दाखिल करते हुए कहा कि पति ने उसके साथ क्रूरता का व्यवहार किया और वर्ष 2013 से उसे अलग रहने के लिए मजबूर किया। पत्नी ने याचिका के साथ एक आवेदन भी दायर किया और मुकदमे के खर्च के साथ अपने और बेटी के लिए प्रति माह 75,000 रुपये के भरण-पोषण का दावा किया।

पीठ ने कहा कि वह फैमिली कोर्ट की इस टिप्पणी से सहमत नहीं है कि चूंकि पत्नी खुद कमाने और अपना भरण-पोषण करने में सक्षम है, इसलिए उसे पति से किसी वित्तीय सहायता की आवश्यकता नहीं है।

अगले 15 तारीख को, सार्वजनिक शिक्षा सचिव के आधिकारिक आवास के सामने, हम भूख हड़ताल पर रहेंगे: ओडिशा अभिभावक संघ

शिक्षा अधिनियम के तहत 8वीं कक्षा तक नि:शुल्क शिक्षा दिल्ली, छत्तीसगढ़, राजस्थान की तरह 9वीं से 12वीं तक बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने की मांग पर सरकार से परामर्श कर कदम उठाने पर सहमति बनी है.

मनोरंजन सासमल , ओड़िशा

भुबनेश्वर : ओड़िशा की OSEPA कार्यालय में ओडिशा पेरेंट्स एसोसिएशन की ओर से शिकायत कक्ष में सात मांगों को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया गया. आज इसका समाधान नहीं हुआ तो कल 15 तारीख से घेराव करने का निर्णय लिया है.मंत्री सुदाम मरांडी का साथ सभी विभागीय निदेशकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में सीबीएसई के क्षेत्रीय अधिकारी के श्रीनिवास, एनसीईआरटी भुवनेश्वर ने विभागीय सचिव अश्वथी की उपस्थिति में दाबि किया ।

चर्चा में ओडिशा पेरेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष बासुदेब भट्ट सहित प्रसन्ना बिसोयी, भूमोहन पटनायक और अशोक पटनायक ने भाग लिया और 7 सूत्री मांगें रखीं.

प्रथम दृष्टया, सरकार निजी स्कूलों में दी जाने वाली सुविधाओं के अनुसार स्कूल फीस तय करने और नियमों के अनुसार स्कूलों को मान्यता देते समय विशेष रूप से स्कूल फीस तय करने पर स्कूल फीस निर्धारण समिति की सिफारिशों पर विचार करने के बाद कार्रवाई करने पर सहमत हुई।

दूसरी मांग के जवाब में, शीर्ष अदालत ने कोविड महामारी के दौरान स्कूल फीस माफी आदेश के कार्यान्वयन पर जल्द ही एक श्वेत पत्र जारी करने पर सहमति व्यक्त की।

तीसरी मांग में सभी कक्षाओं में एनसीईआरटी की किताबें लागू करने और निजी स्कूलों में स्कूल बैग वजन नियमों को सख्ती से लागू करने की चर्चा में सीबीएसई के क्षेत्रीय अधिकारी के श्रीनिवास की विवादास्पद टिप्पणियों और सिफारिशों ने चर्चा में मुश्किलें पैदा कीं, और बाद में इसे लेने पर सहमति व्यक्त की।

चौथी मांग में प्राथमिक शिक्षा निदेशक को आदेश दिया गया कि वे सभी स्कूलों को शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत 25 फीसदी सीटों पर मुफ्त में पढ़ने वाले सभी बच्चों को मुफ्त स्कूल ड्रेस, किताबें और जूते उपलब्ध कराने का तत्काल निर्देश दें.

शिक्षा अधिनियम के तहत 8वीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा दिल्ली, छत्तीसगढ़, राजस्थान की तरह 9वीं से 12वीं तक बच्चों को निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने की मांग पर सरकार से परामर्श कर कदम उठाने पर सहमति बनी है.

पांचवीं मांग के मद्देनजर विभागीय अधिकारियों को बिना मान्यता के चल रहे स्कूलों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए तत्काल कदम उठाने को कहा गया.

छठी मांग के अनुसार, मंत्री ने निर्देश दिया कि जिस निजी स्कूल में वित्तीय अनियमितता के आरोप हैं, उसका विशेष ऑडिट कराया जाए और स्कूल के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए.

सातवें दावे के अनुसार, विभागीय अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने का निर्देश दिया गया कि 10वीं से 11वीं कक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सभी छात्रों को केपी महापात्र समिति की सिफारिश के आधार पर कक्षा प्रोन्नति नियम के अनुसार उस स्कूल में भेजा जाए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय का आदेश.वर्तमान परिदृश्य में, कोचिंग सेंटरों में हिंसा काफी हद तक बढ़ गई है और अभिभावकों और छात्रों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बच्चे डमी स्कूलों में पढ़ रहे हैं. उन्होंने शिक्षा को चिटफंड बना दिया है. इसलिए कोचिंग सेंटरों को नियंत्रण में लाने के लिए कदम उठाने पर सहमति बनी.

अब तक चर्चा के अनुरूप कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाने पर ओडिशा अभिभावक संघ ने सात सूत्री मांग को लेकर शिक्षा सचिव के आवास के सामने भूख हड़ताल करने का निर्णय लिया है.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023